মিথুন লগ্নফল

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तक परिचय	7
2.	लेखक परिचय	10
3.	ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व	11
4.	लग्न प्रशंसा	18
5.	लग्न का महत्त्व	19
6.	जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं	20
7.	लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व	22
8.	लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मिथुनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण	27
9.	मिथुनलग्न एक परिचय	31
10.	मिथुनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में	33
11.	बुध का खगोलीय स्वरूप	35
12.	मिथुनलग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप	37
13.	मिथुनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं	44
14.	नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी	53
15.	नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबल	57
16.	नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी	59
17.	मिथुनलग्न पर अंशात्मक फलादेश	65
18.	मिथुनलग्न में आयुष्य योग	85
19.	मिथुनलग्न और रोग	88
20.	मिथुनलग्न में विवाहयोग	91
21.	मिथुनलग्न में धनयोग	93
22.	मिथुनलग्न में संतानयोग	98
23.	मिथुनलग्न में राजयोग	101
24.	मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति	104

25. मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति 122
26. मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति 139
27. मिथुनलग्न में बुध की स्थिति 153
28. मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति 167
29. मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति 182
30. मिथुनलग्न में शनि की स्थिति 194
31. मिथुनलग्न में राहु की स्थिति 208
32. मिथुनलग्न में केतु की स्थिति 219
33. प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव 229
34. अनिष्ट निवारण के विविध उपाय 232
35. बुधवार की कथा 235
36. बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र 238
37. **रत्न चिकित्सा**–मिथुनलग्न में रत्न धारण के वैज्ञानिक विवेचन 243
38. दृष्टांत कुण्डलियां 245

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'वीर्य' एवं बीज कहा है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए पुस्तके पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पस्तुकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह है, ग्रह नौ है, फलत 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनी। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थियां बनी। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्च्य ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज दिन तक नहीं हुआ वह है–**'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि में है? किस लग्न में है? और कहां किसी भाव (घर) में है? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108

ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाय तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि ग्रह स्थितियां बनेगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्विग्रह युतियां बनेगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनियां में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनियां में ये पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी। यही कारण है। इन किताबों पर जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मीयोग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देगी!!! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? गजकेसरी योग की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेली गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, 'मकर' या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में गजकेसरी योग छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चन्द्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सर्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एव **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी है। जिसका ज्योतिष की दुनियां में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'मिथुनलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मिथुनलग्न में जार्ज वाशिंगटन, जुल्फीकार अली भुट्टो, चार्ल्स शोभराज, पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, प्रियंका गांधी, मुख्यमंत्री जयललिता, डॉ. जाकिर हुसैन, विजयराजे सिन्धिया, अभिनेता राजेश खन्ना, पी. चिदम्बरम्, प्रमोद महाजन जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मिथुनलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र निकलेगा।

मिथुनलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व मे पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्कलग्न**" के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद् उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कसीवीं शताब्दी, तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालवित, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप-स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्चते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुर्हूत चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) 'गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोशं हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and VeoaQnga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar WaoaQ, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं**
OB l OB ;Kk[1]~

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत–अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम–घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र–ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय–अस्त इस शास्त्र की सत्यता एव सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म–मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान–विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप–चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी श्रृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रूपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्गमय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निवीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह--(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिशास्त्रंत बिना द्विजा:।।—वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजानभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनूत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विवरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक ''समय'' विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि ''लग्न'' का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

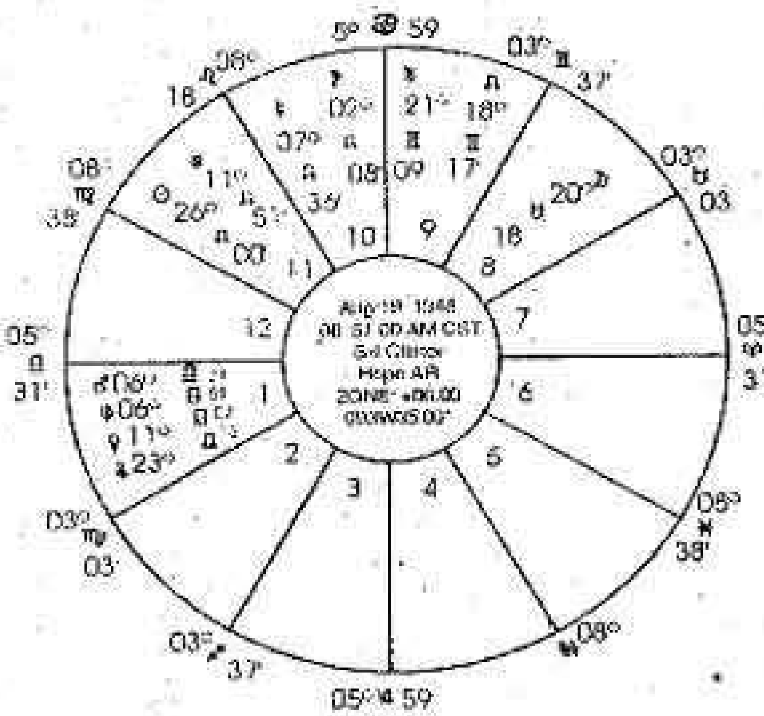

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह

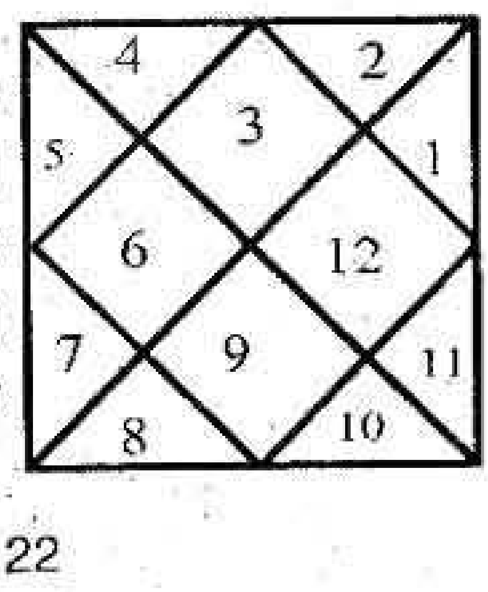

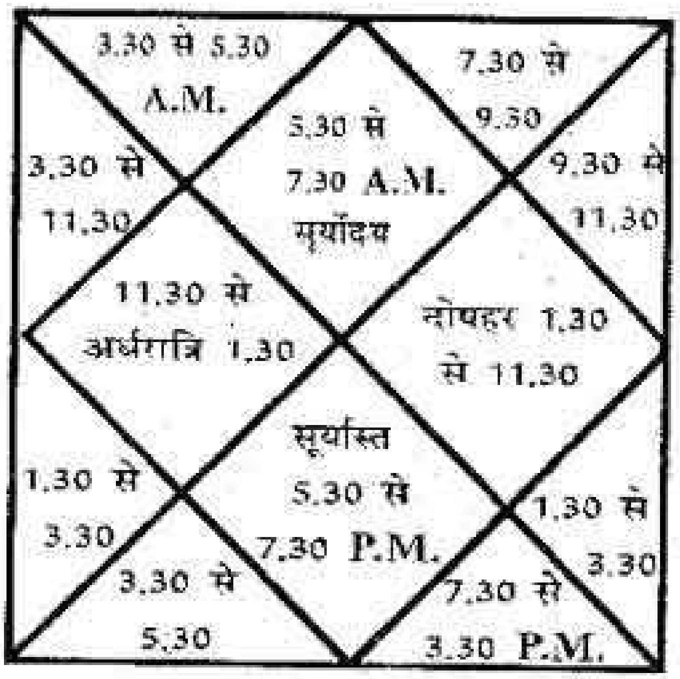

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

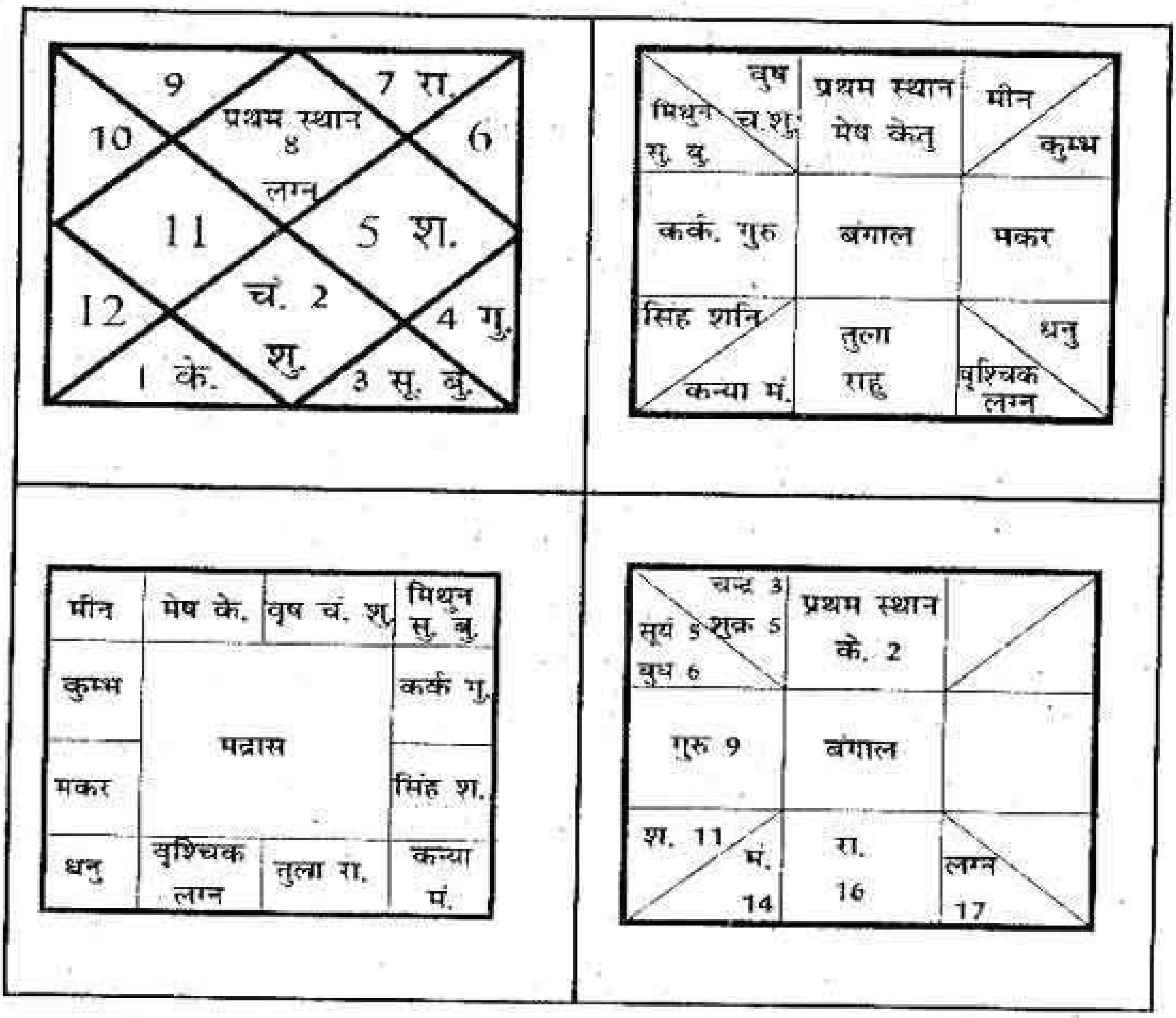

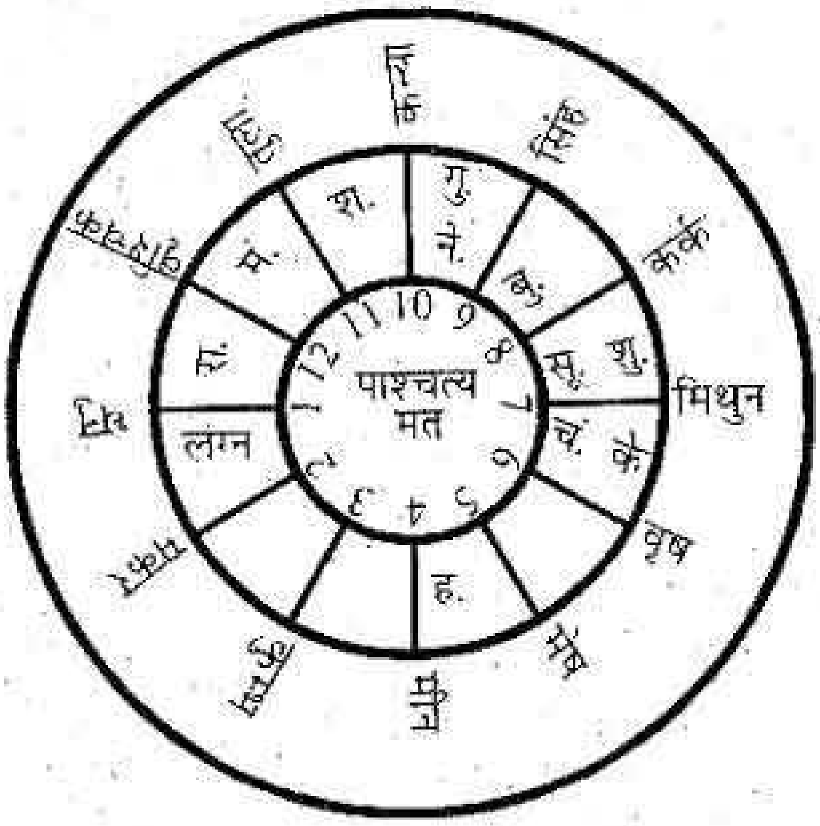

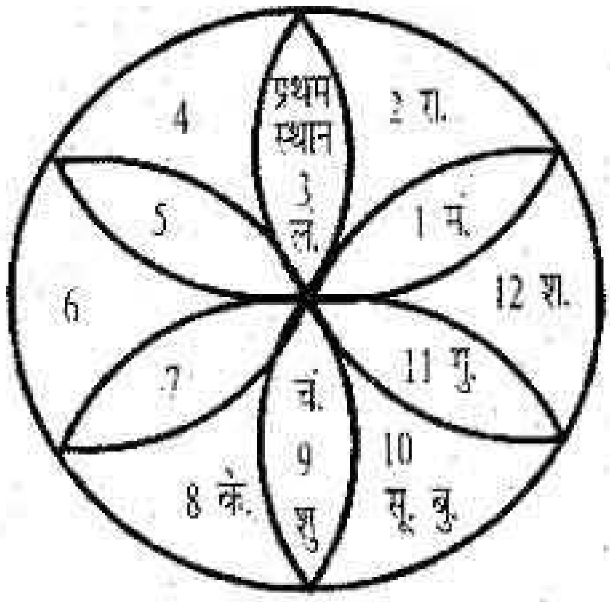

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ.	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि". लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार--

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि--**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

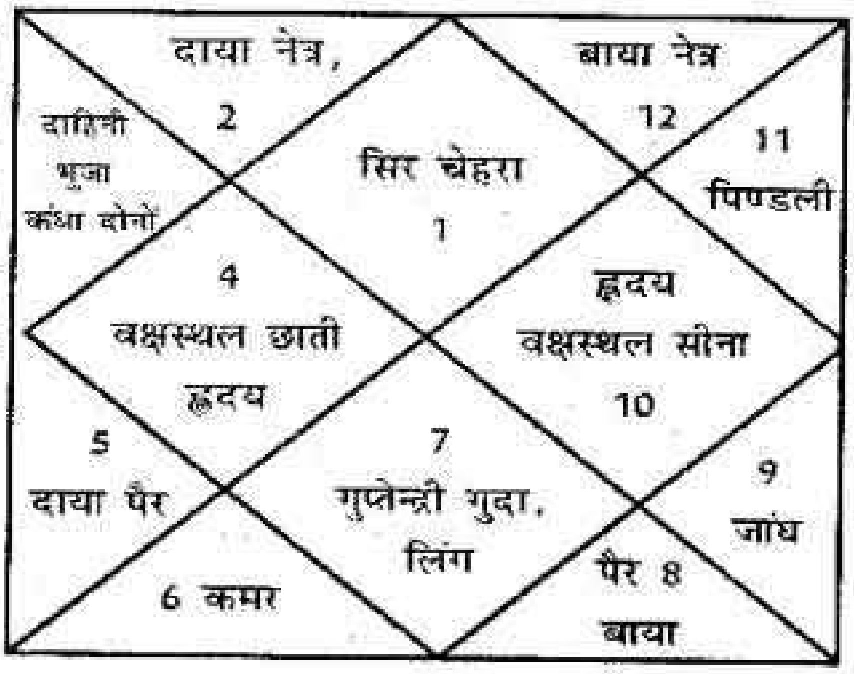

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित

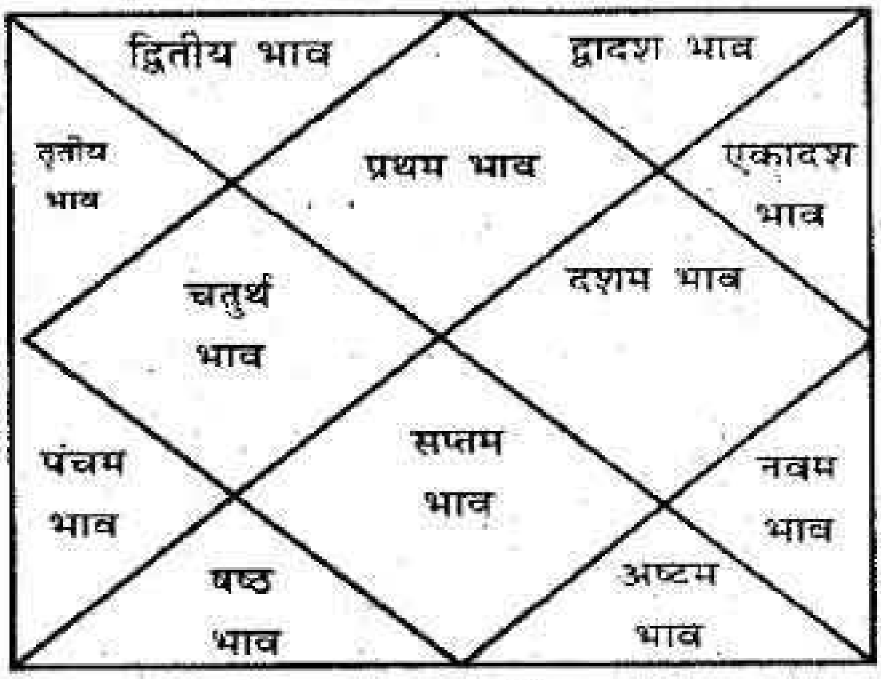

है। अत: अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

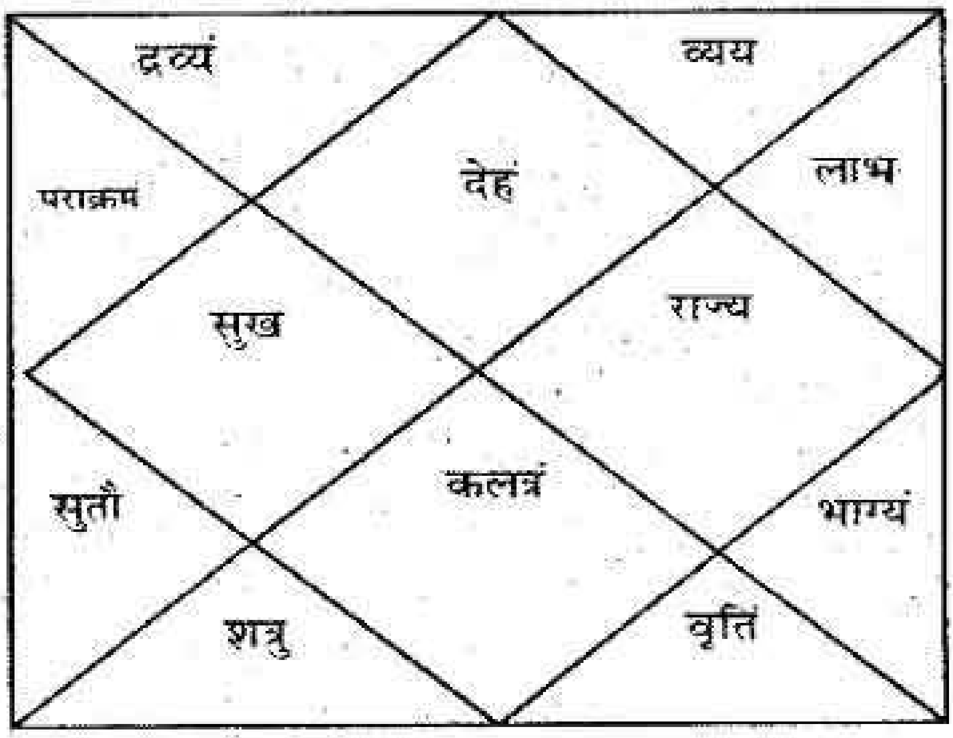

देहं द्रव्यं पराक्रम: सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्ति:।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्यया लग्नत:॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मिथुनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

भौमजीवारुणा: पापा एक एव कवि: शुभ:।
शर्नैश्चरेण जीवस्य योगमेषभवो यथा॥6॥
नायं शशी निहंता स्यादुमिषत्पाप निष्फलम्।
ज्ञातव्यानि दिनेशस्य फलान्येतानि सूरिभि:॥7॥

दूसरा पाठ

कुजभान्विन्दव: पापा एक एव कवि: शुभ:।
राजयोगकरौ शुक्रसोमपुत्रो शुभान्वितौ॥8॥
शनिजीवसमायोगात् फलं मेषभुवो यथा।
शनि: साक्षान्न हन्ता स्यान्-मारकत्वेन लक्षित:॥9॥
भौमादयो निहन्तारो भवेयु: पापिनो ग्रहा:।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञेयानि युगजन्मन:॥10॥

मिथुन लग्न के लिए मंगल, गुरु और रवि अशुभ होते हैं। इसका कारण मंगल षष्ठ स्थान का और एकादश स्थान का स्वामी है। गुरु सप्तम (मारक) स्थान का और दशम स्थान का स्वामी है और वह मारक (सप्तम) स्थान का स्वामी होने से मारकेश है और अशुभ फल करने वाला है। रवि तृतीय स्थान का स्वामी होने से अशुभ है। गुरु का पाप फल उत्पन्न करने का कारण श्लोक 10 में दिया हुआ है। शनि और गुरु का योग मारक होता है। कारण शनि अष्टम स्थान का स्वामी होकर गुरु मारकाधीश है। इसलिए इनका योग अनिष्ट फल उत्पन्न करने वाला है। शुक्र

शुभ फल उत्पन्न करने वाला है। कारण वह पंचम स्थान (त्रिकोण स्थान) का अधिपति है। व्ययेश और द्वितीयेश साहचर्यानुसार फल देने वाले होते हैं। इसलिये चन्द्रमा पाप ग्रहों से संयुक्त नहीं हो तो वह मारक नहीं बनता कारण चन्द्र और सूर्य इनको मारक का दोष नहीं लगता। बुध और शुक्र का संयोग हो तो इसे राजयोग समझना चाहिए। शुक्र लग्न स्वामी बुध का मित्र है इसलिए शुक्र सर्वस्वी शुभ फल देता है। मिथुन लग्न हो तो अकेला शुक्र किसी भी शुभ स्थान में हो तो अति श्रेष्ठ प्रकार के फल देता है। बुध लग्न का और चतुर्थ केन्द्र का स्वामी है और उसका पंचमेश शुक्र के (त्रिकोणेश के) साथ योग श्रेष्ठ फल करने वाला होता है। इस कुंडली में मंगल और शनि मारक होते हैं।

(मतान्तर से) मंगल, रवि और चन्द्र ये अशुभफल देते हैं। अकेला शुक्र मात्र शुभ फल देता है। शुक्र, बुध इनका शुभयोग हो तो राजयोग होता है। शनि और गुरु इनका योग मेष लग्न के समान ही फल करता है। मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी शनि प्रत्यक्ष मारक नहीं बनता। मंगल इत्यादि जो अशुभ ग्रह कहे गए हैं वे मारक होते हैं। इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण

दूसरे पाठ में गुरु की जगह चन्द्रमा लिया गया है। चन्द्रमा धनेश है। इसलिये वह मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है। इसलिए चन्द्रमा की गणना अशुभ ग्रहों में की गई है। इसके सिवाय चन्द्रमा लग्नेश बुध का शत्रु है। पहले पाठ के अनुसार शुक्र अकेला राजयोग करता है और उसकी लग्नेश बुध के साथ मित्रता है इसलिए बुध, शुक्र का योग राजयोग करता है ऐसा कहा हुआ है। कुछ ग्रंथकारों का मत है कि गुरु दशम और सप्तम इन दो कन्द्रों का स्वामी होने से शुभ होता है। शुभ ग्रह केन्द्र स्थान में अशुभ होता है। ऐसा जो भी एक ठोस नियम है तो भी केन्द्र का स्वामी होने के कारण उसने कुछ तो भी शुभ देना ही चाहिए यह उचित है। इस कारण से गुरु को दूसरे पाठ में से निकाल दिया जाता है।

कुछ प्रतियों में इस प्रकार का श्लोक दिया हुआ है।

"रविचन्द्रकुजाः पापा एक एव शनिः शुभः।
चन्द्रात्मजेन संयुक्तों विशेषफलदायकाः॥"

मिथुन लग्न के लिए रवि, मंगल और चन्द्रमा पाप फल देने वाले होते हैं। शनि शुभ फल देता है। यदि इस शनि से बुध का संयोग होता हो तो विशेष फलदायक होगा अथवा राजयोग करेगा।

इस श्लोक में शनि शुभ फल देने वाला है ऐसा कहा हुआ है परन्तु शनि अष्टमेश और भाग्येश होता है यानि भाग्य स्थान का अर्थात् बलवान त्रिकोण स्थान

का अधिपति मानकर अष्टम स्थान का अधिपति जो भी हो तो भी अष्टम स्थान की त्रिषडाय स्थानों में गणना नहीं की गयी होने से इसलिए इसे योगकारी माना गया होना चाहिए।

मिथुनलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–चन्द्रमा द्वितीय स्थान का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार मारकत्व का दोष नहीं होने से वह अशुभ फल नहीं देता लेकिन शुभ फल देता है (मध्यम-फल)।
2. **शुभ योग**–शुक्र द्वादश स्थान का अधिपति होकर बुध से स्थान साहचर्य के कारण और अन्य ग्रहों के साहचर्य के अलावा वह पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–बुध चतुर्थ स्थान (केन्द्र स्थान) का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार अल्पदोष लगता है और शुक्र का स्थान साहचर्य प्राप्त होने पर राजयोग कारक होता है और इतने पर भी वह यदि इन स्थानों में हो तो निश्चयपूर्वक राजयोग करके शुभ फल देने वाला होता है।

मिथुनलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–मंगल पाप ग्रह होकर श्लोक 6 के अनसार षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी होने से विशेष अशुभ है विशेष अशुभ फलदायक होता है।
2. **अशुभ योग**–गुरु सप्तम स्थान का अधिपति होने से मारक होकर सप्तम और दशम स्थानों का (केन्द्रों का) स्वामी होता है। श्लोक 7 के अनुसार और केन्द्राधिपत्य दोष श्लोक 10 के अनुसार ये दोष बलवत्तर हैं और शनि के सह-स्थानाधिपत्य के दोष के कारण से भी वह अशुभ माना गया है। यह मारक होकर अशुभफल देता है।
3. **अशुभ योग**–सूर्य पाप ग्रह होकर तृतीय स्थान का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।

मिथुनलग्न के लिए निष्फल योग

1. गुरु+शुक्र, (दोनों ही दूषित होते हैं), 2. गुरु-शनि, 3. बुध-शनि (शनि अष्टम स्थान का स्वामी हाने से) 4. तीसरा योग श्लोक 22 के अनुसार निष्फल होता है।

मिथुनलग्न के लिए सफल योग

बुध+शुक्र

मिथुनलग्न एक परिचय

1.	धनेश	–	चन्द्रमा
2.	पराक्रमेश	–	सूर्य
3.	लग्नेश, सुखेश	–	बुध
4.	पंचमेश, खर्चेश	–	शुक्र
5.	षष्ठेश, लाभेश	–	मंगल
6.	सप्तमेश, राज्येश	–	गुरु
7.	अष्टमेश, भाग्येश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-शुक्र, 9-शनि,
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
10.	केन्द्राधिपति	–	1, 4-बुध, 7, 10-गुरु
11.	पणफर के स्वामी	–	2-चन्द्र, 5-शुक्र, 8-शनि, 11-मंगल
12.	आपोक्लिम	–	3-सूर्य, 6-मंगल, 9-शनि, 12-शुक्र
13	त्रिकेश	–	6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
14.	उपचय के स्वामी	–	3-सूर्य, 6-मंगल, 10-गुरु, 11-मंगल
15.	शुभ योग	–	1. चन्द्र (मध्यम फल), 2. शुक्र, 3. बुध
16.	अशुभ योग	–	1. मंगल, 2. गुरु, 3. सूर्य
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि
18.	सफल योग	–	बुध+शुक्र
19.	राजयोग कारक	–	बुध, शुक्र, चंद्र
20.	मारकेश	–	चन्द्र मुख्य मारक, सहायक मारक-गुरु

21.	**पापफलद**	–	सूर्य, मंगल, शनि (पापी), परमपापी-सूर्य, मंगल
22.	**शुभ युति**	–	बुध+शुक्र
23.	**अशुभ युति**	–	1. बुध+मंगल

विशेष-मिथुनलग्न में गुरु को 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। शनि नवमेश (योगकारक) होकर भी पूर्णफलदायक नहीं है।

❑❑❑

मिथुनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	मिथुन
2.	लग्न चिह्न	–	स्त्री पुरुष का जोड़ा, गदा व वीणा हाथ में
3.	लग्न स्वामी	–	बुध
4.	लग्न तत्त्व	–	वायु तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	पश्चिम
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष (कुमार)
8.	लग्न जाति	–	शूद्र
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	कन्धा
11.	जीवन रत्न	–	पन्ना
12.	अनुकूल रंग	–	हरा
13.	शुभ दिवस	–	बुधवार
14.	अनुकूल देवता	–	गणपति
15.	व्रत, उपवास	–	बुधवार
16.	अनुकूल अंक	–	पांच
17.	अनुकूल तारीखें	–	5/14/23
18.	मित्र लग्न	–	मेष, तुला, कुम्भ, सिंह, कन्या
19.	शत्रु लग्न	–	कर्क
20.	व्यक्तित्व	–	चतुर, निडर, बुद्धिमान

21. **सकारात्मक तथ्य** – कुशल व्यापारी-व्यवसायी, वाकपटु
22. **नकारात्मक तथ्य** – निर्मोही, आत्मकेन्द्रित, निष्ठुर।

❑❑❑

बुध का खगोलीय स्वरूप

बुध सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है। इसी कारण इस पर भयंकर उष्णता है। बुध सूर्य से 5,80,00,000 किमी. की दूरी पर है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। बुध सदैव अपना एक भाग सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य की परिक्रमा करता है। यह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास केवल 5160 किमी. है। और इसका गुरुत्व भी हमारी पृथ्वी से एक चौथाई है। पृथ्वी पर छः फुट कूदने वाला व्यक्ति बुध पर चौबीस फुट ऊंचा कूद सकेगा। सूर्य के निकटतम होने के कारण इसे देखा जाना भी कठिन है। यह सूर्य के साहचर्य में न होने पर, सूर्योदय के कुछ मिनट पहले पूर्वी क्षितिज पर अथवा सूर्यास्त के कुछ ही मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज पर, प्रथम कक्षा के तारे के समान चमकता हुआ दिखाई देता है। बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के बत्तीस दिन बाद वक्री होता है। वक्री के चार दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। अस्त होने के सोलह दिन बाद पूर्व में उदय, उदय के चार दिन बाद मार्गी, मार्गी के बत्तीस दिन बाद पूर्व में पुनः अस्त हो जाता है।

बुध को क्षैतिज, सौम्य, बोधन, शान्त, कुमार हेम्न, उतारूद, आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

बुध की गति—बुध अपनी धुरी पर 24 घण्टा 5 मिनट में पूरी तरह घूम लेता है तथा 87 दिन 23 घण्टा 15 मिनट और 16 सैकेण्ड में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। जिस समय यह सूर्य के निकट होता है तब प्रति सैकेण्ड 35 मील, दूर रहने पर प्रति सैकेण्ड 23 मील और मध्यम गति 29 मील प्रति सैकेण्ड की गति से परिभ्रमण करता है। यह एक घण्टे में एक लाख नौ हजार मील की गति से चलता है। स्थूल मान से बुध एक राशि पर 25 दिन व एक नक्षत्र पर 8 1/2 दिन रहता है।

सूर्य से 27 डिग्री अंश की दूरी से आगे होने पर यह वक्री हो जाता है। जिस राशि पर यह वक्री होता है, उस पर 25 दिन ही रह पाता है। सूर्य की गति से भी तीव्र गति वाला होने के कारण यह पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदय होता है और

ज़ब वक्री होता है तब पश्चिम में अस्त व पूर्व में उदय होता है। वक्री होने की स्थिति में सूर्य से 12 डिग्री अंश की दूरी पर तथा मार्गी होने पर 13 डिग्री अंश पर अस्त हो जाता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर जाने से वक्री और बारहवीं पर शीघ्रगामी होता है। यह 92 दिन मार्गी और 23 दिन वक्री रहता है। मार्गी होने पर 37 दिन उदय और 36 दिन अस्त हो जाता है। वक्री होने पर 33 दिन उदय और 16 दिन अस्त रहता है। जब बुध की गति 113/32 घटी पल की होती है तब यह परम शीघ्रगामी या अतिचारी हो जाता है। और इस स्थिति में 20 दिन रहता है। यह एक वर्ष में तीन बार वक्री होता है। बुध वक्री होने पर एक दिन आगे या पीछे स्थिर सा प्रतिभासित भी होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बुध पीले रंग की पुष्प माला और पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले में सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

बुध की उत्पत्ति

अत्रि ऋषि के पुत्र चन्द्र हुए उन्होंने एक बार देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर लिया। इससे देवासुर संग्राम हो गया। अन्त में ब्रह्मा जी ने बीच में पड़ कर तारा को बृहस्पति को वापिस दिला दिया। गुरु ने तारा को गर्भवती पाया। उन्हें अपने क्षेत्र में दूसरे का बीज देखकर तारा को गर्भस्राव करने की आज्ञा दी। तारा ने एक सुनहले अणु को गर्भ से बाहर निकाला। उस अण्डे से बालक का जन्म हुआ। वह अति सुन्दर था। उसे देखकर चंद्र और गुरु दोनों ही मोहित हो गये। यह किसका पुत्र है? तारा लज्जावश जब कुछ न कह सकी तो जन्मजात बालक ने मां की झूठी लज्जा से क्रोधित होकर उसे सत्य बोलने पर विवश किया। इस बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी ने उसका नाम बुध रख दिया। यह बुद्धिदाता रहेगा, यह वरदान दिया। बालक को चंद्रमा को सौंप दिया गया। तब से बुध चंद्र पुत्र कहलाये। उनके जन्म के बाद उनकी प्रेरणा से भौतिक ज्ञान का उजागर करने वाली वेद विद्या अर्थववेद के रूप में प्रसिद्ध हुई। अर्थशास्त्र, गणित व विज्ञान कला कौशल व्यापार के सूत्र उसमें रहे। अतः बुध का सम्बन्ध व्यापार से बन गया।

अतः बुध सौम्य ग्रह कहलाया व शुभ ग्रह माना गया है। यह गुरु, चंद्र व तारा तीनों के मिश्रण का स्वरूप है। गुरु का रंग पीला, चंद्र का सफेद व तारा का लाल

था। अत: इनके मिश्रण से इस ग्रह का रंग दूर्वादल श्याम हरा रंग बना। असल में वात पित्त और कफ का मिश्रण बुध है। यह कल्पना इसमें रूपात्मकता से दी गई है। गुरु का क्षेत्र और चंद्र का वीर्य होने से यह दोनों से शत्रुता रखने वाला ग्रह बना। साथ ही अन्य क्षेत्र में उत्पन्न होने से यह वर्ण संकर अर्थात् नपुसंक ग्रह कहलाया गीता में कहा गया है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चन्द्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्‌भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चन्द्रमा के समान ही कान्तिमान हैं। (मत्स्य पुराण 24/1/2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या-बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चंद्रवंश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्‌भागवत (4/22/13) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध प्राय: मंगल ही करते हैं। किन्तु जब यह सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं, तब आंधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है।

मत्स्य पुराण के अनुसार बुध ग्रह का वर्ण कनेर के पुष्प की तरह पीला है। बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम—श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दांत, हरा, वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्‌रस, भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए। नवग्रह मण्डल में इनकी पूजा ईशान कोण में की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र–'**ओइम उद्‌बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥**', पौराणिक मंत्र '**प्रियकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥**' बीज मंत्र '**ओइम ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**। सामान्य मंत्र **ओइम बुं बुधाय नमः**। इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल

संख्या 9000 तथा समय 5 घड़ी दिन है। विशेष परिस्थितियों में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

व्यापारी

नाना प्रकार के रसों का संग्रह करने वाला व्यापारी होता है। यह भोजन के सभी रसों को बनाकर उनको स्नायुओं में संचालित करता है। अत: यह स्नायु मंडल का अधिकारी है। सुन्दर रस परिपाचक से त्वचा सुन्दर बनती है। अत: यह त्वचा पर पूर्ण अधिकार रखता है। इसकी मूलत: दो राशियां हैं। नकारात्मक राशि मिथुन और सकारात्मक राशि कन्या है।

राशि स्वरूप मिथुन में स्त्री पुरुष का जोड़ा बताया गया है और कन्या में सुन्दर कन्या हाथ में ज्वाला लिए दिखाई गई है। मिथुन वायु तत्त्व प्रधान राशि है और कन्या पृथ्वी तत्त्व प्रधान है। अत: वायु और पृथ्वी का मिश्रण बुध है।

बुध का अधिकार क्षेत्र

वायु तत्त्व प्रधान बुध का प्रभाव स्कंध, फेफड़ा, ऊपरी पसली, कन्धे, हाथ, बाजू, स्वर अंग, श्वास नली व कोशिकाओं पर पड़ेगा। पृथ्वी तत्त्व से नाभिचक्र अग्नाशय, कमर मेरवला और आंतों पर होगा। बलवान बुध इनमें विकार नहीं आने देगा और बिगड़ा हुआ इनमें से भावानुसार कोई रोग देगा।

बुध के अधिकारियों में स्नायुतंत्र, जीभ, आंत, वाणी, नाक, कान, गला, फेफड़े आते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में यह तीसरे और षष्ठ भाव का प्रतिनिधित्व करता है। बुध के बिगड़ने पर, उसकी विशोंतरी दशा में मस्तिष्क विकार, याददाश्त कमजोर होना, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पड़ना, सूंघने, सुनने और बोलने की शक्ति का ह्रास होता है।

खेलकूद, हंसी-मजाक इसके क्षेत्र हैं। रेडियो, तार, टेलीफोन इसके अधिकार में हैं। इसकी मुख्य धातु पारा है। इसका रत्न पन्ना है यह सदा कुमार ही रहता है। बाल्यावस्था पर इसका अधिकार है। यह सबसे छोटा ग्रह होने से इसे क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं।

बुध का स्वरूप

मिथुन राशि में स्त्री पुरुषों का मिथुन चित्र है। यह दूर्वादल श्याम रंग का है अत: इसका गेहुआं रंग होता है। कन्या राशि में अग्नि का अस्त्र भाण्ड हाथ में लिए नाव में बैठी कन्या का चित्र है। यह रूपवान है। कुछ गौर वर्ण की है। मिथुन में

कद लम्बा होगी क्योंकि यह पुरुष राशि है और कन्या में मझौला कद होगा। सामान्यत: चेहरा भरा हुआ, नेत्र काले और बालों में कुछ घुंघरालापन होगा। नाक, ऊंची, हाथ पैर लम्बे, और दुबले दोनों राशियों में ऊष्मा की कमी रहेगी। नेत्र आकर्षक, सुन्दर व मतवाले होंगे। आकर्षक घनी केश राशि होगी।

कन्या राशि या लग्न वालों में स्त्री स्वभाव की झलक पाई जाती है। दोनों दो विरोधी पक्षों से मेल रखने में माहिर होंगे। मीठा बोलकर अपना काम बनायेंगे। दोनों मनोरंजन के शौकीन, विलासी, प्रसन्न रहने वाले, कुछ मजाक करने वाले व चचंल मस्तिष्क वाले होंगे। बुध प्रधान व्यक्ति शीघ्र सिखावट में आने वाले व सोहबत का असर भी इन पर शीघ्र होगा। ऐसे व्यक्ति दूसरों की भूलों को सूक्ष्मता से निकालने में होशियार होंगे व सामने वाले की मंशा शीघ्र समझ जायेंगे।

मिथुन जातक का व्यक्तित्व विद्रोही होगा। कठोर परिश्रमी होगें, साहस होगा। जोखिम उठा सकेगा। इनका विचारने का तरीका तर्कसंगत व वैज्ञानिक होगा। जातक चतुर, चालाक, वाचाल व कुशल व्यापारीपन रहेगा। इनकी पठन-पाठन में रुचि भी रहेगी। मैकेनिकल कार्य में भी रुचि रहेगी।

कन्या में पराया धन, भवन, वाहन का लाभ पाएगा। कुशाग्र बुद्धि होगा। पढ़ने में होशियार होगा। विद्वता रहेगी। राजनीति में सफलता, मेडिकल लाईन व सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। यह ज्यादा भावुक होंगे। बिना सोचे समझे कार्य कर लेंगे। कोमल प्रकृति होगी। संकट में शीघ्र घबराने वाला। प्रेम के क्षेत्र में असफल रहेंगे। पत्नी पक्ष से परेशान होंगे व पुत्र संतान कम होगी। बुध प्रधान व्यक्ति दो विरोधियों पार्टियों से मेल रखने में माहिर होंगे।

बुध की बलवत्ता

कन्या मिथुन राशि में, कन्या मूल त्रिकोणी, बुधवार को द्रेष्कोण तथा नवांश में स्वगृह में धनु राशि में (रवि के साथ न हो तो) रात को तथा दिन को विसुव के उत्तर में, तथा शनि के मध्य भाग में, लग्न में अकेला हो तो बली होता है। बली होने पर यश और बल की वृद्धि करता है। लग्न में दिग्बली होता है। हर्ष बली होता है। यह चतुर्थ व दशम भाव का कारक ग्रह है। मीन में नीच का होता है। सूर्य से 13 अंशों के भीतर अस्त भी होता है। प्राय: सूर्य बुध साथ ही देखे जाते हैं। अत: अस्त, वक्री और मार्गी बनता रहता है। इसकी राशि बदलने की अवधि 1 मास है। सूर्य, राहु, शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु, मंगल, शनि सम हैं। चंद्र से इनकी शत्रुता है। कन्या के 15 अंश तक मूल त्रिकोण में होने से ज्यादा बलवान रहता है तथा परमोच्च का कहलता है। मीन के 15 अंशों तक परम नीच रहता है। नीच होकर यदि यह वक्री हो तो शुभ फल देता है। प्रात: सूर्योदय के 2 घंटे तक बलवान रहता है।

विवेचन

यह राहु के दोष को दूर करता है। ''राहुदोष बुधो हन्यात्'' प्रसद्धि है। यह चौथे स्थान में विफल होता है। अत: चौथे भवन में बैठकर निर्बल हो जाता है। शुक्र से बुध की पराजय होती है। इसकी दृष्टि तिरछी है। वैसे सातवें तो देखता है ही पर अपनी एक राशि को देखते ही दूसरी राशि को भी देख लेता है। इसकी विशेष दृष्टि नहीं है। इसकी दिशा उत्तर मानी गई है।

ईशान कोण इसका निवास माना गया है। इसका घर बाण आकार का है। जन्मभूमि मगध देश है। इसके देवता विष्णु हैं। इसे प्रसन्न करने हेतु ''विष्णु सहस्र नाम'' का पाठ श्रेष्ठ रहता है। यज्ञ और ज्ञान का यह अधिष्ठाता है। यह रजोगुणी, ब्राह्मण है क्योंकि अण्ड और जन्म दोनों यह अणुज द्विज है। ''द्वाभ्यां जन्म संस्कारत् जायते इति द्विज'' यह प्रसिद्ध है। यह यों तो सर्वदा बली माना गया है। यह शीघ्र फलदाता है। यह 32वें वर्ष में भाग्योदय करता है। मेष, सिंह, धनु इसकी शुभ राशियां हैं। वृष, कन्या, मकर साधारण तथा मिथुन, तुला, कुम्भ उत्तम, कर्क, वृश्चिक, मीन अशुभ राशियां हैं। बुध को दी हुई वस्तु शीघ्र नहीं आती है। बुध के दिन विद्या प्रारम्भ का निषेध है व किसी वस्तु को देना भी मना है। व्यापार प्रारम्भ की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

बुध के अचूक फल

- ❑ बुध अकेला किसी भाव में कम ही पाया जाता है। अत: इसके अकेले के फल के वर्णन मिलने कठिन हैं। क्योंकि बुध सूर्य या शुक्र प्राय: साथ में या आगे पीछे रहते हैं। अत: इनके परिप्रेक्ष्य में फल मिलते रहते हैं।
- ❑ लग्न में अकेला बुध शुभ फल करेगा, शुभ दृष्टि हो तो व्यापार से धनी बनायेगा (लग्न+कन्या+मिथुन)।
- ❑ सातवें भाव में अकेला बुध हो तो प्राय: नपुसंकता ही देगा चाहे शुभ दृष्टि ही क्यों न हो (लग्न कन्या, बुध) विवाह शीघ्र होगा।
- ❑ तीसरे भाव में बुध व्यक्ति को ज्योतिषी, डॉक्टर, लेखक और न्यायाधीश बनाता है। (लग्न कर्क, कन्या, धनु)
- ❑ यदि धन स्थान में बुध तीसरे शुक्र हो, तो जातक ज्योतिषी, सुन्दर हस्ताक्षर वाला, तीव्र स्मरणशक्ति वाला होगा। 24, 30, 36वें वर्ष में जातक का भाग्योदय होगा।
- ❑ चौथे बुध, गु+शु+श के साथ ही उत्तम व्यापार व वाहन योग बनेगा। यदि राहु साथ हो तो जमीन योग निर्बल रहेगा।

- मिथुन लग्न में पाप प्रभावी बुध चर्म रोग देता है। सू+चं. के साथ हो तो।
- द्वितीयेश बुध का पाप प्रभाव घर से भागने की प्रवृत्ति करेगा।
- तृतीयेश बुध (लग्न, मेष, कर्क) हो तो पाप पीड़ित व अकाल मृत्यु के संकेत हैं।
- अष्टमेश बुध (लग्न वृश्चिक, कुम्भ) सट्टे से धन दिलाने वाला हो तो निर्बल धन नाश होगा।
- मिथुन राशि में बुध तृतीय व भावेश पाप प्रभावी हो तो सांस की नली, दमा खांसी के रोग होंगे।
- कन्या राशि में बुध षष्ठ भाव भावेश पीड़ित हो तो कब्ज, टायफाईड, हर्निया, आंत्रशोथ होंगे।
- तृतीयेश बुध के साथ हो कण्ठ रोग की संभावना रहेगी।
- षष्ठेश और बुध लग्न में हो तो जातक गूंगा होता है।
- चंद्र+मंगल+बुध तीनों ग्रह राहु व शनि से पीड़ित हो तो कुष्ठ रोग होगा।
- चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन के संकेत हैं।
- शनि की राशियों में बुध या मंगल हो तो जातक हंसी दिल्लगी वाला होगा।
- बुध का गुरु से संबंध हो तो जातक हंसोड़ होगा।
- बुध के साथ चंद्र भी पीड़ित हो, चौथा भाव भी पीड़ित हो तो त्वचा रोग होगा।
- यदि धनेश वक्री हो बुध स्थान में दरिद्र योग बनेगा।
- केन्द्र में स्वगृही या उच्च का बुध हो तो भद्रयोग बनेगा। व्यक्ति धनी बनेगा।
- सातवें नीच का बुध हो तो विवाह देर से होगा।
- 5वें बुध (लग्न कर्क, वृश्चिक, मीन) प्रथम पुत्री हो बाद में पुत्र होगा (कुम्भ में संतान की कमी)
- बुध यदि मेष, सिंह, धनु राशि में हो तो व्यक्ति ज्योतिषी, गणितज्ञ, तत्त्वज्ञानी, इंजीनियर, वृष, कन्या मकर में हो तो पदार्थ, विज्ञान, हस्तरेखा मिथुन, तुला, कुम्भ चिकित्सक व्याकरणी व्यापारी होगा। कर्क, वृश्चिक, मीन में टाइपिंग अंगूठे का विशेषज्ञ।
- बुधादित्य योग के कारण जातक सरकारी नौकरी, शिक्षक या डॉक्टर, वकील बनेगा। क्लर्क, बैंक में नौकरी।

- दशम भाव में बुध राशि 1, 5, 9 का इंजीनियर, गणितज्ञ, क्लर्क शिक्षक। 2, 6, 10 व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, ठेकेदार। 3, 7, 12 समाचार सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक।
- 11वें भाव में बुध राशि 1, 5, 9 में हो तो 1 या 2 पुत्र होंगे। 2, 6, 10 में जातक चित्रकार, टाईपिस्ट, कम्पाउण्डर होगा। 3, 7, 11 में हो तो शिक्षा डिमोस्टेटर। 4, 8, 12, में हो तो स्वतंत्र व्यापार की संभावना है।
- 12वें भाव में बुध होने से व्यक्ति खर्चीला, ज्ञानी व विद्वान होगा एवं समाज में अग्रणी होगा।

उपाय

निर्बल बुध को बलवान करने तथा बुध दोष दूर करने हेतु।

1. विष्णु पूजन, यज्ञ व विष्णु सहस्र नाम का पाठ करें।
2. बुध रत्न पन्ना 7 से 8 रत्ती तक का, विषम संख्या लीलड़ी या हरा कांच भी पहन सकते हैं। हरी चड्डी या बनियान पहनें।
3. बुधवार को यम की पूजा करें और ब्राह्मण से जप कराएं।
4. बुधवार को गणपति दर्शन कर भोग लगाएं। गणपति को दूध चढ़ाएं।
5. गाय को हरी घास दें। हरी सब्जी, अन्न क्षेत्र में दें हरी वस्तु मंदिर में चढ़ाएं।
6. हाथी को नारियल दें।
7. सत्यनारायाण व्रत करें व कथा करें।
8. कांसे के पात्र में सुवर्णतुष डालकर छायादान करें।
9. हर बुधवार गौ को मूंग की दाल, गुड़, रोटी दें।
10. तोते को हरी मिर्च दें, तोता पालें।
11. वैष्णव संत के घर, हर बुधवार सीधा सामान दें।
12. एकादशी का व्रत करें व साधुओं को हरे फल दें।
13. बुधवार को व्रत करना भी श्रेष्ठ होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मिथुनलग्न का स्वरूप

पार्वतीय कन्याख्या राशिर्दिनबलान्दिता।
शीर्षादया च मध्याड्गा द्विपाधाभ्यचरा च सा ॥13॥
सा सस्यदहना वैश्य चित्रवर्णा प्रभुंजिनी।
कुमारी तमसा युक्त बालाभावा बुधाधिपा॥14॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 9

शीर्षोदय, गदा और वीणा सहित पुरुष स्त्री की जोड़ी, पश्चिम दिशावासी, वायु तत्त्व, द्विपद, रात्रिबली, ग्रामचारी, वात प्रकृति, समदेह, हस्ति वर्ण है, इसका स्वामी बुध है।।9।।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलः श्यामेक्षणः शास्त्रविद्,
दूतः कुंचितमूर्धजः पटुमतिर्हास्येङ्गितद्यूतवित्।
चार्वङ्गः प्रियवाकप्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्तवित्,
क्लीवैर्याति रतिं संमुन्नतनसश्चन्द्र तृतीयर्क्षगे।13।।

—बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 7

मिथुनस्थ चन्द्रमा से मनुष्य स्त्रियों के विषय में विशेष आकर्षण अनुभव करने वाला, शास्त्रोक्त विधि से सम्भोग करने वाला अर्थात् विभिन्न मुद्राओं व विधियों से स्त्री को संतुष्ट व तत्पर करने में कुशल, काले नेत्रों वाला, शास्त्र तत्त्व को जानने वाला, द्यूतकर्म अर्थात् सन्देश वचन में निपुण, कुछ मुड़े बालों वाला, चतुर बुद्धि अर्थात् प्राज्ञ, हास्य एवं दूसरे के भावों को ताड़ लेने वाला, द्यूतक्रीड़ा के रहस्यों को समझने वाला, सुन्दर शरीर वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, सदैव खाने के लिए तत्पर, गीत प्रिय, नाटक व उसके अंगों को समझने वाला गुणदोषज्ञ, नपुंसकों से प्रेम रखने वाला, एवं ऊंची नासिका वाला होता है।

तृतीयलग्ने तु नरोऽभिजातो विज्ञानविद्यागमशास्त्रलुब्धः।
स्वपक्षपूज्यः परपक्षहन्ता जितेन्द्रियः स्याद्बहुवित्तयुक्तः।।3।।

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.3/ पृ.287

यदि मिथुनलग्न में जन्म हो तो मनुष्य कुलीन, विशेष ज्ञान से युक्त, विद्या से युक्त, विद्या व शास्त्र का रसिक, अपने पक्ष में पूज्यत्व पाने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, अत्यधिक धन सम्पन्न होता है।

भोगी बन्धुरतो दयालुरधिकः श्रीमान् गुणी तत्वविद्
योगात्मा सुतनप्रियोऽतिसुभगो रोगी च युग्मोदये।

–जातक पारिजात श्लो. 3/ पृ. 678

भोगी अपने बन्धुओं को प्रेम करने वाला, विशेष मात्रा में दयालु, धनी, गुणी, तत्त्ववेता योगात्मा(योगासक्त जिसकी आत्मा हो अर्थात् आत्मिक उन्नतिशील, सज्जनों का प्रिय) (या सज्जन प्रिय हों), अत्यन्त सुन्दर स्वरुप, रोगी।

मिथुनादिमे दृगाणे पृथूत्तमाङ्गो धनान्वितः प्रांशुः।
कितवो गुणी विलासी नृपाप्तमानो वचस्वी स्यात्।।

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में मिथुन राशि तथा मिथुन राशि का महिला द्रेष्काण हो तो जातक मोटे मस्तक वाला, धनी, ऊंचा, धूर्त, गुणी, विलासी, राजा से सम्मान प्राप्त करने वाला और अच्छा वक्ता होता है।

मिथुनोदयसन्जातो मानी स्वजनवल्लभः।
त्यागीभोगी धनीकामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दकः।।

–मानसागरी अ. 1/ श्लो3

मिथुनलग्न वाले जीव मानी, बन्धुजनों का प्रेमी, दानी, भोगी, शांत गति से क्रियाशील, शत्रु हन्ता तथा वाहन सुख-मित्र युक्त, उज्ज जीवों के समीप, सहवासशील, नीतिमान चतुर होता है।

भोजसंहिता

मिथुनलग्न का स्वामी बुध सूर्य का सबसे निकटतम ग्रह है। यह प्रायः उदीयमान होते हुए सूर्य के साथ व अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य के साथ देखा गया है। इस राशि वाले व्यक्ति प्रायः पीत वर्णीय देखे गए हैं। बुध जिस ग्रह के साथ बैठता है अथवा जिस ग्रह का इस पर प्रभाव होता है यह तत् वत् हो जाता है उसी के

अनुसार व्यक्ति का रंग व चरित्र हो जाता है। मिथुन राशि वाले व्यक्ति पर संगत का असर बहुत ज्यादा होता है ऐसा देखा गया है। बुरी संगत इनको बुरा बना देती है तथा अच्छी संगत से ये अच्छे बन जाते हैं। ये शीघ्र ही दूसरे लोगों के प्रभाव व आकर्षण केन्द्र में आ जाते हैं। यह इस लग्न वालों की सबसे बड़ी कमजोरी है।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

का की कु   घ ड़ छ   के हो हा

मृगशिरा-2   आर्द्रा-4   पुनर्वसु-3

मृगशिरोर्धम् आर्द्रा पुनर्वसु पाद त्रयं मिथुन:

मृगशिरा नक्षत्र

यदि आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र में हुआ है तो आपकी राशि का प्राकृतिक स्वभाव विद्याध्ययनी और शिल्पी है। इस राशि वाले बालक बहुत ही चतुर व सुंदर होते हैं। प्राय: ये मध्यम कद एवं छरहरे बदन के होते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक आर्थिक दृष्टिकोण से मितव्ययी एवं सोच विचार कर खर्च करने वाले होते हैं। इनकी प्रगति में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं तथा इनका जीवन परिवर्तनमय रहता है। Change is Charm of Life के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले ये व्यक्ति प्राय: एक धन्धे को छोड़कर दूसरे धंधे में हाथ डालते हुए देखे गये हैं।

चरण	अंश से तक	चरण के नवांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
तृतीय	1.0.0 से 3.20.0 तक.	शु. शु.	मं. बु.	बु. के.	1.00.00 से 1.53.20 1.53.20 से 2.40.00
चतुर्थ	3.21.0 से 6.40.0 तक	मं. मं. मं.	बु. बु. बु.	शु. सू. चं.	2.40.00 से 4.53.20 4.53.20 से 5.33.20 5.33.20 से 6.40.0

यह द्विस्वभाव लग्न है। अत:एव इस लग्न वाले व्यक्ति प्रत्येक वस्तु के दोनों पहलुओं पर बहुत अच्छी तरह सोच विचार कर फिर निर्णायात्मक कदम उठाते हैं, यह लग्न मध्यम संतति और शिथिल शरीर का प्रतिनिधित्व करता है। इसको क्रोध कम आता है प्राय: यह शान्त व गम्भीर स्वभाव के होते हैं। यदि ये क्रोधित हो जाएं तो क्रोध शान्त होने पर फिर पश्चाताप प्रकट करते हैं।

इस राशि का चिह्न "गदा व वीणा सहित" पुरुष-स्त्री की जोड़ी है। अत:एव व्यक्ति गायन-वाद्य आदि कलाओं में रुचि रखते हैं।

आर्द्रा नक्षत्र

यदि आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र में हुआ है तो अध्ययनशीलता के साथ इनमें व्यापारिक बुद्धि होती है, इनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। आप सभी की सुनते हैं परन्तु करते वही हैं जो दिल कहता है, आप रहस्यवादी व्यक्ति हैं, आपके मन की थाह पा लेना बहुत कठिन है इसके विपरीत आप दूसरों के मन की बात को तुरन्त भांप लेते हैं। इस राशि वाले जातक व्यापारिक संस्थाओं में अधिकतर Salesman, or जनसम्पर्क के लिये नियुक्त किये जाते हैं, ऐसे व्यक्ति सरकारी क्षेत्र में भी Public Dealing कार्यों में देखे गये हैं। रौबीले व सख्त अनुशासनात्मक कार्य कलाप इनके बस का खेल नहीं है। ये शारीरिक प्रेम की अपेक्षा मानसिक श्रम पर ज्यादा जोर देते हैं, क्योंकि यह राशि वायु तत्त्व प्रधान है।

आर्द्रा के चारों चरणों के फल–

रौद्रर्क्ष प्रभवो बालो भवेत्पाद चतुष्टये
व्ययी दरिद्री स्वल्पायु तस्करस्तु यथा क्रमम्॥

प्रथम चरण में–नवांशेश, गुरु और उप नक्षत्र स्वामी राहु का प्रभाव चंद्र पर या लग्न पर पड़ेगा। अत: जातक धनकारक गुरु का राहु प्रभाव से खर्च करेगा। अत: बहुत खर्चीला होगा।

द्वितीय चरण में–नवांशेश शनि का राहु व उपनक्षत्र स्वामी शनि से संबंध बनेगा। अत: मिथुन राशि का चंद्र यदि आर्द्रा के द्वितीय पाद में आ गया तो निर्धन बना देगा या धन की कमी करेगा।

तृतीय चरण में–इसमें भी नवांशेश शनि का चंद्र+बुध+शुक्र+सूर्यादि से संबंध बनेगा। अत: यह आयु पर प्रभाव करके शारीरिक कष्ट या अल्प आयु देगा।

चतुर्थ चरण में–नवांशेश गुरु का चंद्र से योग तो बनता है परन्तु राहु+चंद्र योग भी है। उपनक्षत्रों में मंगल प्रभाव पड़े तो व्यक्ति तस्कर बनता है। अत: छुपाने की या चोरी करने की आदत जातक में होगी।

मिथुनलग्न में उत्पन्न जातक विनम्र, उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा बुद्धिमत्ता का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इनमें स्वाभिमान का भाव विद्यमान रहता है तथा यह भौतिक सुख साधनों एवं धनैश्वर्य से सम्पन्न रहते हैं। वे

कार्यों को अत्यंत ही सोच समझ कर सम्पन्न करते हैं तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता है। संगीत एवं कला के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा नवीन सिद्धान्तों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में इनको सफलता प्राप्त होती है।

अत: इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक संतुष्टि भी बनी रहेगी। अपने समस्त सांसारिक महत्त्व के कार्यों को आप बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा आप धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा आप सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा वाणी में भी मधुरता रहेगी साथ ही शांति विनम्र एवं हास्य प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ रहेंगे। कला एवं संगीत के प्रति आप रुचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न से आपको इस क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है। लेखन, गणित, सम्पादन या व्यापार संबंधी कार्यों में आप उन्नति प्राप्त करके समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ रहेंगे।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। फलत: अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में सफल होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे। फलत: अपनी विद्वत्ता से समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव होगा तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। आप अवसरानुकूल सामाजिक जनों के मध्य उदारता तथा दानशीलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलत: आपके सामाजिक प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में सतत् वृद्धि होती रहेगी। आप धर्म के ज्ञाता होंगे तथा गूढ़-से-गूढ़ विषय को हृदयंगम करने में समर्थ होंगे।

व्यापार के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा इसके द्वारा आप धनवान एवं विख्यात होंगे। संगीत एवं कला में भी आप समयानुसार अपनी रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप सांसारिक ऐश्वर्य से युक्त होंगे। तथा सामान्यतया आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता से युक्त रहेगा। इस प्रकार आप शांत, उदार, हास्य प्रवृत्ति युक्त एवं विद्वान पुरुष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

पुनर्वसु नक्षत्र

यदि आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ है तो आप सबसे प्रेम करते हैं परन्तु बहुत कम व्यक्ति स्नेह पूर्ण व्यवहार को समझ पाते हैं, प्राय: इनके प्रेम का संबंध लोग कायरता से जोड़ देते हैं। इनके कई गुप्त शत्रु होते हैं। इनके कई संतान होती हैं परन्तु उनमें आपस में या माता पिता के प्रति विद्वेष की भावना हो जायेगी। सहयोगी, पड़ोसी व ससुराल पक्ष में ऐसे जातक के प्रति षडयंत्रकारी वातावरण बनते रहते हैं, आपको निकटतम मित्र से विश्वासघात की आशंका बनी रहती है, आप सतर्क रहें।

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	23.20.0	मंगल	गुरु शनि बुध	20.0.0 से 21.46.40 21.46.40 से 23.53.20 23.53.20 से 25.46.40
द्वितीय	26.40.0	शुक्र	केतु शुक्र	25.46.40 से 26.33.20 26.33.20 से 28.46.40
तृतीय	30.0.0	बुध	सूर्य चंद्र	28.46.40 से 29.26.40 29.26.40 से 30.0.0

यह नक्षत्र मिथुन राशि के 20 अंश से कर्क राशि के 3.20 अंश तक रहता है। अत: गुरु इसका स्वामी है। इसमें 3 चरण तक तो मिथुन राशि ही है। अत: चंद्र+बुध+गुरु का प्रभाव रहेगा। आगे चौथे चरण में चंद्र+गुरु+चंद्र का प्रभाव बनेगा। अत: जातक मूर्ख, धनबल का अभिमानी पर प्रसिद्ध कवि और कामातुर बनता है। यह संपूर्ण नक्षत्र फल है।

"मूढ़ात्मा च पुनर्वसौ धनबलस्यात्: कवि: कामुक:"

पुनर्वसु नक्षत्र में चरणगत चंद्र के फल

प्रथम चरण में–गुरु+चंद्र और नवांश में मंगल का संयोग है तीनों ही परस्पर मित्र होने से जातक खूब सुखी रहेगा।

द्वितीय चरण में–इसमें गुरु+चंद्र+शुक्र संयोग होने से जातक विदुषी होगा।

तृतीय चरण में–इसमें गुरु+चंद्र+बुध संयोग होने से बुध की चंद्र व गुरु से शत्रुता के कारण जन्म लेने वाली जातिका रोगिणी होगी।

संपूर्ण फल

इस तरह मिथुन राशि का फल सूक्ष्मतर बनता है। अतः इस राशि में जन्म लेने वाली स्त्री कफ, वात और पित्त प्रकृति वाली बनेगी, कुछ अल्प बुद्धि वाली और छोटे लेकिन पुष्ट शरीर वाली एवं प्रायः गौरवर्ण वाली होगी। यह अपने धर्म में विशेष श्रद्धा रखेगी और प्रायः मीठा वचन बोलकर अपना काम निकालेगी। उसका स्वास्थ्य भी साधारण होगा। 1 व 7-वर्ष की उम्र में जल भय, 24वें वर्ष में बीमारी का योग है। यानि 3-5-8-11-20-28 व 45 वर्ष की आयु में भी कष्ट रहेंगे। अगर लम्बी आयु बनती हो तो 76 वर्ष तक जा सकती है। आयु भवन के संयोग लग्नगत स्वभाव से सही नहीं बैठते हैं पर रोगों से बचें तो ऐसा संभव है। अंत में त्रिदोष से या जल से या विष से मृत्यु संभावित है। इस लग्न में मंगल व गुरु मारक बनते हैं।

इस लग्न में या चंद्र लग्न में शुक्र प्रधान ग्रह है। शुभ ग्रह शुक्र ही बनता है। मंगल, गुरु, सूर्य व शनि पापी बनते हैं। केन्द्राधिपत्य दोष बुध व गुरु को लगता है। मिश्रफलकर्त्ता चंद्र (सम) है। बुध भी मिश्रफल कर्ता है। राजभंग योग करने वाला शनि और सप्तमेश गुरु बाधक ग्रह बनता है।

राजयोग भंग संबंध गुरु+मंगल दशमेश लाभेश संबंध से होगा। चंद्र भी मारक बनता है पर सम है। यदि शुक्र+गुरु+मंगल संयोग हो तो राजयोग भंग नहीं होगा।

रोग

मिथुन राशि में बुध प्रभावी हो और साथ में तीसरे भाव तृतीयेश पर भी पाप प्रभाव हो तो काल पुरुष की तीसरी राशि का अंग सांस की नली के रोग, दमा व खांसी बनते रहेंगे वायु तत्त्व का नुकसान होगा।

खराब दशा

यहां पर षष्ठेश एकादशेश बनकर मंगल ज्यादा पापी है। गुरु के बाधक ग्रह होने से इन दोनों की दशाएं खराब ही जायेंगी।

शुभ योग

बुध+सूर्य युति से शुभ योग बनेंगे चाहे स्थान परिवर्तन हो या तीसरे भाव में भी बैठ जायें बुध+शुक्र भी शूल योग बनायेंगे।

पागलपन

बुध+चंद्र पाप प्रभावी हो व शुक्र भी पाप दृष्ट हो तो पागलपन बनेगा।

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	10.0.0 10.0.0	गुरु गुरु	राहु गुरु	6.40.0 से 8.40.0 8.40.0 से 10.26.40
द्वितीय	13.20.0	शनि	शुक्र बुध केतु	10.26.40 से 12.33.20 12.33.20 से 14.13.20 14.26.40 से 15.13.20
तृतीय	16.40.0	शनि	शुक्र सूर्य	15.13.20 से 17.26.40 17.26.40 से 18.6.20
चतुर्थ	20.0.0	गुरु	चंद्र मंगल	18.6.20 से 19.13.20 19.13.20 से 20.0.0

लग्न में, पाप ग्रह में यदि मंगल हो तो कुण्डली प्रबल मांगलिक होगी।

लग्नेश धन में धनेश लग्न में हो श्रेष्ठ योग होगा परन्तु कुण्डली मांगलिक होने के कारण जातिका शीघ्र विधवा तो होगी पर विश्व प्रसिद्ध महिला बनेगी। चंद्र+मंगल की युति से कीर्ति योग बनेगा। कुण्डली में मंगल से मांगलिक शनि से भी है। बाधक ग्रह गुरु षष्ठ में है स्वगृही सूर्य भी श्रेष्ठ श्रम करने वाला रहा। अत: विश्व प्रसिद्ध होने पर भी मिथुन लग्न में उत्पन्न नारी अति कठोर हो सकती है, पर व्यंग करने में चतुर होती है। ऐसी स्त्री कार्य करने में असंतुष्ट रहती है। भोग विलास का सुख खूब प्राप्त करती है व शौकीन भी होती है। परिवार वालों से बैर शीघ्र मोल ले लेती है। वही पहले वाला श्लोक इसमें भी काम करेगा। ''मूर्ती करोति विधवा दिनकर जश्य'' सूर्य और मंगल में से लग्न में कोई भी हो वैधव्य देंगे ही। अन्य पाप ग्रह राहु, शनि भी दुष्ट फल करेंगे। लग्नेश बुध षष्ठ में राहु अधिष्ठित राशि का होगा तो त्वचा रोग भी देगा।

उपाय

ऐसे व्यक्ति को बुध रत्न पहनकर अर्थात् पन्ना पहनकर स्वास्थ्य व धन को कमाना चाहिए। बुध के साथ-साथ शुक्र का रत्न भी धारण करना चाहिए।

स्वभाव

मुख्यत: इसका स्वभाव दो विरोधी पक्षों से मेल रखकर चलने का होगा। जातक की तबीयत रंगीन रहेगी तथा चौथे घर में नीच का ही सही शुक्र जातक को

शालीन स्वभाव बनाता है अन्य शुभ ग्रह हो तो शालीन स्वभाव रहेगा। लग्न मिथुन या कन्या का नवांश आये तो स्वभाव सुन्दर रहेगा। चेहरे पर प्रसन्नता झलकती रहेगी।

अन्य बातें

- मिथुन राशि या लग्न वाली जातिका का व्यक्तित्व विद्रोही होता है। वह कठोर परिश्रमी भी होती है। इतना सब कुछ होने पर भी वह सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकती है। जिसकी वह अधिकारिणी होती है, परन्तु जातिका अत्यधिक साहसी होती है।
- जातिका आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामिनी होती है। वह बाधाओं का सामना आसानी से कर सकती है।
- जातिका की पढ़ने लिखने में रुचि होती है। पुस्तक व्यवसाय या मैकेनिकल कार्य में उसकी रुचि होती है। जातिका जोखिम उठाने को तत्पर रहती है।
- जातिका का विचार करने का तरीका वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत होता है।
- व्यक्ति चतुर व चालाक, वाचाल एवं कुशल व्यापारी होता है।
- संगत का असर शीघ्र होता है।
- जातिका दूसरे की मंशा शीघ्र समझने वाली व बुद्धिशाली होती है व तर्क पर सबको कसेगी।
- जातिका नाच-गान, मनोरंजन व विलास की शौकीन होगी।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लू	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,कों,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरू	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेष	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,चो,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
कर्क	8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेष	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पूर्वा भा.	अजेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
	26.	उ. भा.	अहिर् बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	चू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. **मृगशिरा** (मंगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	—	—	—	—

कर्क राशि

7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेषा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
—	—	—	—	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
—	—	—	—	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
—	—	—	—	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चंद्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

मिथुनलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मिथुनलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/3/20 से 2/3/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–का
11. वर्ग–बिलाड
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एवं भोगी होता है।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रूका हुआ रहेगा। बुध व मंगल की दशा अशुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–3

3. **नक्षत्र अंश**–2/30/20 से 2/3/20 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–का
11. **वर्ग**–बिलाड
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एव भोगी होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–का
11. **वर्ग**–बिलाड
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र

है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्यप्रिय एवं भोगी होता है।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–की
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–'धन धान्य समन्वितः'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र हैं। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अतः इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलतः जातक धनधान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/3/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव

8. नाड़ी–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–की
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम
18. **प्रधान विशेषता**–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/3/20 से 2/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–की
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम
18. **प्रधान विशेषता**–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति की युति से चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायेगी। आवक के जरिए खुलेंगे।

मिथुनलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायेगी। नौकरी मिलेगी।

मिथुनलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–घ
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–घ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)

6. **योनि**–श्वान

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–शिव

10. **वर्णाक्षर**–घ

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोतर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–2/10/0 से 2/13/20 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–श्वान

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–शिव

10. **वर्णाक्षर**–घ

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अत: दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद (नर)

6. योनि–श्वान

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आदि

9. नक्षत्र देवता–शिव

10. वर्णाक्षर–ड

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र से जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र मत है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। राहु भी शुभ फल देगा। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–श्वान

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–शिव

10. वर्णाक्षर–ड

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। राहु की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद (नर)

6. योनि–श्वान

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–शिव

10. वर्णाक्षर–ड

11. वर्ग–बिलाव

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्णबली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–ड
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/16/40 से 2/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–छ
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तस्करतु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/16/40 से 2/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–छ
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तस्कस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/6/40 से 2/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद (नर)

6. **योनि**–श्वान

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–शिव

10. **वर्णाक्षर**–छ

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–तस्कस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद (नर)

6. **योनि**–श्वान

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–शिव

10. **वर्णाक्षर**–छ

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–तस्कस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास

की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा

मिथुनलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–I
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–के
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी का सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–I
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–मार्जार

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–शिव

10. **वर्णाक्षर**–के

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता शिव तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न तेइस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी का सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु

2. **नक्षत्र पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–2/23/0 से 2/26/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद (नर)

6. **योनि**–मार्जार

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–के

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी

मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा पर बुध की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–के
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा। गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–को

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अतः दोनों आचार्यों से संबंध रखने वाला जातक विद्वान् होगा।

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–2/20/40 से 2/30/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–मार्जार

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–को

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अतः दोनों आचार्यों से संबंध रखने वाला जातक विद्वान् होगा।

यहां लग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–ह
11. वर्ग–मीढा
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अत: ऐसा जातक रोगी होगा कोई न कोई बीमारी उसे लगी रहेगी।

यहां लग्न 28 से 29 अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरणस्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलत: बृहस्पति एवं बुध दोनों की दशाएं नेष्टफल देंगी।

मिथुनलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–ह

11. **वर्ग**–मीढा

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अतः ऐसा जातक रोगी होगा तथा कोई न कोई बीमारी-उसे लगी रहेगी।

यहां लग्न 29 से 30 अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था (Combust) में है। निस्तेज है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलतः बृहस्पति एवं बुध दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी

❑❑❑

मिथुनलग्न और आयुष्य योग

1. मिथुनलग्न के लिये चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल, गुरु अशुभ है। सूर्य परमपापी है। आयुष्य प्रदाता ग्रह बुध है।
2. मिथुनलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु जल से, अधिक रक्त बह जाने से, वाहन से, भयानक दुर्घटना से अथवा हृदय रोग से सम्भव है।
3. मिथुनलग्न वालों की औसत आयु 75 वर्ष की मानी गई है। इनके जन्म के उपरान्त 3 माह, 6 माह, 1, 3, 6, 10, 11, 18, 20, 24, 26, 33, 40, 46, 53, 58, 62 और 63 वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. मिथुनलग्न में मंगल लग्न से पूर्वार्द्ध (2 से 7 तक) में हो, तथा उत्तरार्द्ध दूसरे भाग (7 से 12) में बृहस्पति हो, केन्द्र स्थानों में शुक्र एवं बुध उच्च का हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
5. मिथुनलग्न में शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है।
6. मिथुनलग्न में शनि उच्च का पंचम भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
7. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि लग्न में, गुरु एवं शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक 100 वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
8. मिथुनलग्न में चन्द्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुम्भ राशि में हो तथा अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों में हों तो जातक 90 वर्ष की उत्तम आयु को भोगता है।
9. मिथुनलग्न में चन्द्रमा छठे वृश्चिक का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
10. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
11. मिथुनलग्न में शनि मेष का, मंगल तुला का पान्चवें एवं सूर्य सातवें हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

12. शनि लग्न में, कन्या का चन्द्र चौथे, मंगल सातवें और सूर्य दसवें, किसी भी शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

13. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चन्द्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

14. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चन्द्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

16. मिथुनलग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

17. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

18. मिथुनलग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।

19. मिथुनलग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

20. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।

21. मिथुनलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

22. मिथुनलग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

23. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो बालारिष्ट योग बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।

24. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

25. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रूग्णता बनी रहती है।

26. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृ घातक होता है।

27. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

28. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

29. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

30. मिथुनलग्न में चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. मिथुनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा और शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और रोग

1. मिथुनलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।
2. मिथुनलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश बुध पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध कर्क या मीन राशि में हो एवं अस्त हो तो जातक को तीव्र हृदय रोग होता है।
5. मिथुनलग्न में शनि चौथे कन्या का, षष्टेश मंगल एवं सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग है।
6. मिथुनलग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. मिथुनलग्न में कन्या का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य नवमें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
8. मिथुनलग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. मिथुनलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हार्ट-अटैक होता है।
10. मिथुनलग्न में बुध+शनि+मंगल की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से जातक की मृत्यु होती है।
11. मिथुनलग्न में पाप ग्रह हो, लग्न का स्वामी बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. मिथुनलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

13. अष्टमेश शनि लग्न में एवं लग्नेश बुध अष्टम में हो लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।

14. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध चौथे या द्वादश भाव में शनि+मंगल के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

15. मिथुनलग्न में शनि+चंद्रमा से युत होकर बृहस्पति छठे भाव में स्थित हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

16. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

19. मिथुन लग्न में शनि+ मंगल हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।

20. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

21. मिथुनलग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।

22. मिथुनलग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

23. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चंद्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।

24. मिथुनलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

25. मिथुनलग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

26. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।

27. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हों, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

28. मिथुनलग्न के आठवें स्थान मे सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रुग्णता बनी रहती है।

29. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक 'मातृ घातक' होता है।

30. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

31. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

32. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. मिथुनलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. मिथुनलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और विवाह योग

1. लग्न से सप्तम भाव के मध्य सूर्य, मंगल, शनि हों तो जातक की स्त्री को वैधव्य भोगना पड़ता है।
2. स्त्री की कुण्डली में मंगल सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री पुरुष रक्त, कुकर्म तत्पर व सौभाग्यहीन होता है।
3. मिथुनलग्न में कर्क का चंद्रमा एवं धनु का बृहस्पति सप्तम में हो तो वह स्त्री विश्व सुन्दरी का मुकुट धारण करती है।
4. बुध सातवें स्थान में शनि युक्त हो तो पति नपुंसक होता है।
5. सप्तमेश अपने मूल त्रिकोण में हो तथा धनेश के साथ हो और लग्नेश अपनी उच्च राशि में हो तो जातक का विवाह उच्च कुल में होता है तथा जातक का 18वें वर्ष में भाग्योदय होता है।
6. सप्तम में सूर्य, मंगल, चंद्र या शनि हो तो जातक अन्य जाति की लड़की से विवाह होता है।
7. मंगल, शनि सप्तम में हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा किसी राशि में पुरुष ग्रह व स्त्री ग्रह दोनों एक साथ बैठे हों तो वृद्धावस्था में अधिक उम्र की स्त्री प्राप्त होती है।
8. क्रूर ग्रह अष्टम में वैधव्य करता है, वह वैधव्य किस वय में होगा इसका निर्णय अष्टम स्थान का स्वामी जिस नवाशं में हो उस नवाशं स्वामी ग्रह की अवस्था में वैधव्य योग होता है।
9. मिथुनलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
10. मिथुनलग्न में शनि द्वादशस्थ या अष्टमस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

11. मिथुनलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश गुरु बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

12. मिथुनलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र की युति कहीं भी हो, सप्तमेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

13. मिथुनलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चन्द्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो जातक का विवाह नहीं होता।

14. मिथुन लग्न में राहु हो तथा शुक्र मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वन्ध्या) राशिगत हो तो विवाह विलम्ब से होता है तथा जीवन साथी से तृप्ति नहीं मिलती।

15. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

16. मिथुनलग्न में द्वितीयेश चन्द्रमा अस्त हो, द्वितीय भाव में वक्री ग्रह स्थित हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

17. मिथुनलग्न में सप्तमेश बृहस्पति वक्र हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

18. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि स्वराशिगत, उच्चराशिगत या उच्चाभिलाषी हो तो जातक एक पत्नीव्रत व भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। 34 वर्ष की आयु में जातक को विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन व मान मिलता है।

19. मिथुनलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहनकर परपुरुषों का संग करती है एवं कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।

20. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल लग्न में बुध के साथ हो तो ऐसा जातक स्त्री सहवास योग्य नहीं रहता अर्थात् नपुंसक होता है।

21. मिथुनलग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है।

22. मिथुनलग्न में सूर्य, मंगल, गुरु, चन्द्र, बुध व शुक्र तथा शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

23. मिथुनलग्न में बुध स्वगृही लग्न में हो साथ में अष्टमेश शनि भी हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और धन योग

मिथुनलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिये धन प्रदाता ग्रह चन्द्रमा है धनेश चन्द्र की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, चन्द्रमा एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश बुध, पंचमेश शुक्र, भाग्येश शनि एवं लग्नेश मंगल की अनुकूल स्थितियां मिथुनलग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में पूर्णरूप से होती है।

वैसे मिथुनलग्न के लिए मंगल, गुरु और सूर्य अशुभ हैं। अकेला शुक्र शुभ है। चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का काम नहीं करेगा। रवि निष्फल है। मंगल षष्टेश और लाभेश होने से अशुभ और राजयोग भंग करने वाला बन गया है। मिथुनलग्न में गुरु को केन्द्राधिपत्य दोष लगने से वह शुभ फल नहीं दे पाता। शनि अष्टमेश व नवमेश होने से पूर्ण योग फलदायक नहीं है। सूर्य व मंगल परम पापी हैं।

सफल योग– 1. बुध+शुक्र

निष्फल योग– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि,

अशुभ योग– 1. बुध+मंगल 2. बुध+गुरु 3. बुध+सूर्य

राजयोग कारक–बुध, शुक्र, चन्द्र।

लक्ष्मी योग–मंगल नवम में, शुक्र सप्तम में, चन्द्रमा केन्द्र-त्रिकोण में।

विशेष योगायोग

1. मिथुनलग्न में चन्द्रमा कर्क या वृष राशि में हो तो जातक धनवान होता है।
2. मिथुनलग्न में चन्द्रमा शनि के घर कुम्भ राशि में हो एवं शनि चन्द्रमा के घर कर्क राशि में हो तो जातक अपने भाग्य के बल पर खूब रुपया कमाता है तथा लक्ष्मीपति होता है।

3. मिथुनलग्न में पंचम स्थान में शुक्र हो, लाभ स्थान में मंगल हो तो, व्यक्ति बहुत सारी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता हुआ प्रतिष्ठित धनवान होता है।

4. मिथुनलग्न में बुध हो, बुध के साथ शुक्र या शनि हो अथवा शुक्र, शनि लग्न को देखते हों तो व्यक्ति शहर का प्रतिष्ठित धनवान होता है तथा अपने स्वयं के पुरुषार्थ से आगे बढ़ता है।

5. मिथुनलग्न में शनि कुम्भ का तुला राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली कहलाता है।

6. मिथुनलग्न में चन्द्रमा मेष राशि में तथा मंगल कर्क राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हों तो ऐसा जातक महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।

7. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा चन्द्रमा स्वगृही होकर धन स्थान में मंगल के साथ हो या मंगल चन्द्रमा के सामने भाग्य स्थान (कुम्भ राशि) में हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद भारी धन-सम्पत्ति का स्वामी हो जाता है।

8. मिथुनलग्न में लग्नस्थ बुध, गुरु या शनि से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।

9. मिथुनलग्न हो, स्वराशि का शुक्र पंचम भाव में हो, शनि लाभ स्थान में हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

10. मिथुनलग्न में बुध मेष राशि में हो तथा मंगल लग्न में हो तो जातक 53वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धन लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

11. मिथुनलग्न हो, लग्नेश बुध, धनेश चन्द्र, भाग्येश शनि तथा लाभेश मंगल अपनी-अपनी उच्च एवं स्वराशियों में हों तो जातक करोड़पति होता है।

12. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

13. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार ऐसे जातक के पास धन नहीं ठहर पाता।

इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु जातक को गले में अभियंत्रित 'चंद्र यंत्र' धारण करना चाहिये।

14. मिथुनलग्न में धनेश चंद्रमा यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से भी रुपया निकल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. चन्द्रमा स्व का हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

16. द्वितीयेश उच्च स्थान में बैठा हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

17. षष्ठेश, पंचमेश की युति होने से दरिद्र योग बनता है।

18. बुध सप्तम भाव में हो तथा द्वादशेश चतुर्थ भवन में हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।

19. बलवान धनेश सातवें हो तथा शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।

20. यदि धन व चन्द्रमा 10वें स्थान पर हो तो यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।

21. मिथुनलग्न में गुरु, शनि व मंगल लग्न में हों तो जमींदार योग होता है।

22. दिन का जन्म हो, मिथुनलग्न हो, चन्द्रमा मित्र के नवांश में हो तो धन-सुख मिलता है।

23. मिथुनलग्न हो, गुरु, चंद्र की युति कर्क में हो तो गजकेसरी योग होता है। जातक विवेकी, सद्गुणी, नम्र तथा धनी होता है।

24. मिथुनलग्न हो, शनि स्व (कुंभ) का त्रिकोण में पड़ा हो तथा दशमेश गुरु पंचम भाव में बैठकर सुरपति योग बनाता है। ऐसा जातक अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

25. मिथुनलग्न में मंगल लाभ स्थान में यदि मेष राशि का हो तो ''रुचक योग'' बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

26. मिथुनलग्न में सुखेश बुध, लाभेश मंगल नवम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

27. मिथुनलग्न में गुरु+चन्द्र की युति कर्क, कन्या, तुला या कुम्भ राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

28. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा अष्टम में एवं अष्टमेश शुक्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन कमाता है।

29. मिथुनलग्न में तृतीयेश सूर्य लाभस्थान में एवं लाभेश मंगल तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

30. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र के साथ यदि चतुर्थेश बुध की युति हो तो व्यक्ति माता, वाहन व नौकरों के द्वारा धन अर्जित करता है।

31. मिथुनलग्न में तृतीयेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में हो तथा लग्नेश लाभेश का परस्पर परिवर्तन योग हो तो जातक प्रकाशन कार्य एवं बुद्धि वैचित्रय से करोड़ों रुपये कमाता है।

32. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा (धन भाव) अर्थात् अपने घर को देखता हो। लग्नेश बुध उच्च का केन्द्र में हो। लग्न स्थान या लग्नेश पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक कुबेर के समान करोड़ों का स्वामी होता है।

33. मिथुनलग्न में यदि बलवान चन्द्र पंचमेश शुक्र के साथ हो, धन भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र संतान द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

34. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र यदि षष्टेश मंगल के साथ हो तथा धनेश चन्द्र शनि से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के मान-मर्दन से धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

35. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

36. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की नवमेश शनि के साथ युति हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो ऐसे जातक को राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी अनुबंध (ठेके) से काफी धन की प्राप्ति होती है।

37. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की दशमेश गुरु से युति हो तो जातक को पैतृक, सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

38. मिथुनलग्न में दशम भवन का स्वामी बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान पर नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

39. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य वृश्चिक, मकर या वृष राशि में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

40. मिथुनलग्न के द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

41. मिथुनलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चन्द्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

42. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्र अस्त हो, नीच राशि (वृश्चिक) में हो, तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

43. मिथुनलग्न में लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत तथा पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

44. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। सावधान रहें।

45. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मिथुनलग्न एवं संतान योग

1. मिथुनलग्न में चन्द्रमा तुला का पंचम भाव में हो तो जातक के पुत्र होता है।
2. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र यदि आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
3. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र अस्त हो या पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
4. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न (मिथुन राशि) में हो तथा बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
5. मिथुनलग्न में शुक्र लग्न में हो तथा लग्नेश बुध पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो जातक दूसरे की सन्तान गोद लेता है तथा उसको अपने बच्चे की तरह पालकर अपने धन का स्वामी बनाता है।
6. मिथुनलग्न में पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक के छः कन्याएं होती हैं।
7. मिथुनलग्न में सूर्य पंचम में हो तथा मकर या कुम्भ के नवमांश में पाप पीड़ित हो तो जातक को पितृश्राप का दोष होता है। जिसके कारण उसे पुत्र सन्तान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा मे ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध द्वितीय स्थान में तथा पंचमेश शुक्र पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।

12. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

13. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र की सप्तमेश गुरु के साथ युति हो जातक को प्रथम सन्तान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. सप्तमेश गुरु व तृतीयेश सूर्य की अन्यान्याश्रित योग होने से जातक के सन्तान बहुत होती है।

16. शुक्र कन्या का तथा सूर्य पंचम भाव में होने पर जातक के कन्याएं अधिक होती हैं।

17. शुक्र धनु का, चंद्र मीन का तथा कन्या राशिस्थ शनि, मंगल, राहु हो तो जातक के संतान नहीं होती।

18. गुरु धनु का हो तथा शुक्र, मंगल कहीं भी एक साथ होने पर उस स्त्री को संतान नहीं होती।

19. सप्तम स्थान में शनि, मंगल साथ हो तो स्त्री (जातक) के सन्तान होती ही नहीं।

20. स्त्री जातक के सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री दुष्टा होती है। पति से सदा अनबन रहती है तथा सन्तान गुणहीन होती है।

21. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

22. पंचमेश शुक्र निर्बल हो, लग्नेश बुध भी निर्बल हो तो पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।

23. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।

24. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।

25. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चन्द्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हों तो ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र सन्तान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती।

27. मिथुनलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चन्द्रमा यदि पंचम स्थान में हों तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।

❑❑❑

मिथुनलग्न और राजयोग

1. मिथुनलग्न वाले मनुष्य के लग्न में यदि राहु और सिंह का मंगल पराक्रम स्थान में बैठा हो उच्च या मेष का सूर्य एकादश स्थान में विराजमान हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. लग्न में बुध, कर्क का चन्द्रमा धन भाव में, पराक्रम में सिंह का सूर्य और दशम में मीन का बृहस्पति हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का गुरु दूसरे भाव में, उच्च का बुध चतुर्थ भाव में और उच्च का सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ पंचम भवन में हो, स्वगृही बृहस्पति सप्तम में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. स्वगृही सूर्य तृतीय स्थान में बैठा हो तथा उच्च का बृहस्पति स्वगृही चन्द्रमा के साथ धन भाव में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के पंचम स्थान में हो और उच्च का सूर्य के साथ स्वगृही मंगल एकादश भवन में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का शुक्र दशम, उच्च का सूर्य एकादश, उच्च का बुध चतुर्थ और उच्च का शनि पंचम में हो तो राजयोग करता है।
8. यदि मिथुन का शुक्र लग्न में हो, कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा धन (दूसरे) स्थान में हो, सिंह का बृहस्पति तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से धनी होता है तथा कीर्ति पाता है।
9. सूर्य एकादश भाव में, मंगल मृत्यु भवन में हो, शनि उच्च का हो तथा बुध त्रिकोण में हो तो जातक अवश्य ही मंत्री बनता है या राज्यपाल होता है।

10. शुक्र, लग्नेश व दशमेश, दशम भाव में हो तो जातक अवश्य राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है। हां, मंगल अवश्य ही 10वें भावस्थ होतो।

11. शुक्र पंचम भाव में, मंगल स्व का मेष में, गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक अवश्य ही शासन में उच्च पद प्राप्त करता है।

12. लग्नेश सप्तमेश की किसी केन्द्र में युति हो तथा गुरु उसे देखता हो तो उत्तम राज्ययोग होता है।

13. सभी ग्रह परमोच्च में हों तथा बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक देश का सर्वश्रेष्ठ पद संभावलता है।

14. लग्न में बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र की युति हो तथा उस पर पाप ग्रहों की छाया न हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

15. बुध सुख भाव में, गुरु 10वें तथा शुक्र त्रिकोण (5वें) में हो तो जातक एम. एल.ए. होता है।

16. गुरु कर्क में तथा चन्द्रमा वृष का हो तो जातक नेता बनता है।

17. गुरु या शुक्र उच्च का हो तथा वह चन्द्रमा को पूर्ण सृष्टि से देखता हो तो जातक मंत्री बनता है।

18. शनि मिथुन का, गुरु स्व का सप्तम भाव में तथा शुक्र की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

19. बुध, शुक्र व गुरु नवम् भाव में हो तथा इन पर मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।

20. गुरु द्वितीय भाव में तथा चन्द्रमा धनु राशि का हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।

21. शनि अपने कारक स्थान, गुरु, चन्द्र के साथ 7वें स्थान में तथा बुध चतुर्थ भाव में हो तो जातक की उच्च श्रेणी की नौकरी प्राप्त होती है।

22. सुखेश, कर्मेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जमींदार योग बनता है।

23. लग्नेश बुध पंचम भाव में तथा शुक्र लग्न में हो तो महा राजयोग होता है।

24. बुध, गुरु, शुक्र क्रमश: 4, 7, 10वें स्थान में हों तथा अन्य ग्रह अन्यत्र तो जातक एम.पी. बनता है।

25. सभी ग्रह लग्न व त्रिकोणों में हों तो जातक सेनाध्यक्ष बनता है।

26. मिथुन लग्न हो, गुरु कर्क का, शनि तुला व सूर्य मेष राशि का होने से नृप योग होता है। जातक उच्च शासकीय पद प्राप्त करता है। उदाहरण–मुरारजी देसाई की कुण्डली देखें।

27. मिथुनलग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुन्दरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश, नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।

28. मिथुनलग्न में द्वितीय स्थान में चन्द्रमा, बुध, मेष में गुरु, दशम स्थान में राहु शुक्र हो तो राजयोग होता है।

29. मिथुनलग्न में राहु, सिंह में मंगल हो तो इस योग में जातक घोड़ा, हाथी रखने वाला राजा होता है।

30. मिथुनलग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हों, तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

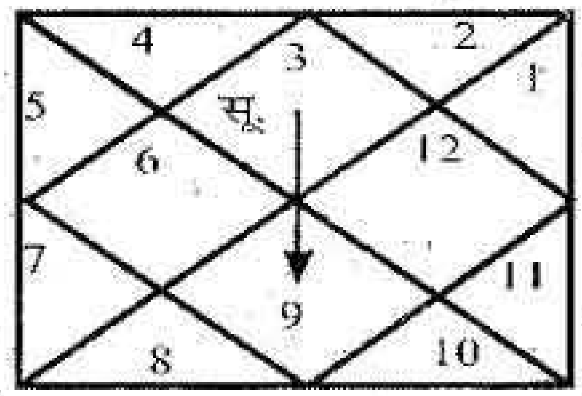

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पर प्रथम स्थान में सूर्य मिथुन राशि का होगा। यह इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक राजा के समान उच्च राज्याधिकारी होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, धार्मिक कार्यों में अग्रणी एवं परम्पराओं का पालक होता है। जातक स्वस्थ शरीर का स्वामी होता है, उसका बौद्धिक स्तर बढ़ा-चढ़ा होता है।

दृष्टि—लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को स्त्री व पुत्र दोनों सुख प्राप्त होंगे।

निशानी—स्वभाव में भावेश होने के कारण किसी से भी शीघ्र टकराव होगा।

दशा—सूर्य की दशा में उन्नति होगी, पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–जातक अधिक साहसी व हठी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां स्वगृही होगा। लग्न में बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां पर 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि भी होगी। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपने बुद्धिबल एवं वाक् चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–ऐसा जातक आध्यात्मिक व धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–ऐसा व्यक्ति दार्शनिक होता है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक की किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी
7. **सूर्य+राहु**–जातक साहसी एवं राजा तुल्य पराक्रमी होता है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक क्रोधी होता है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

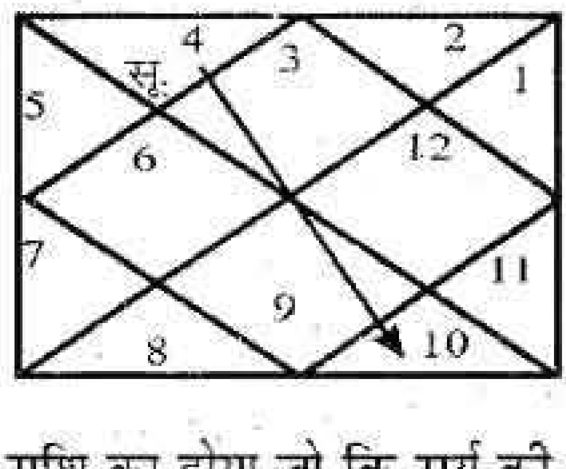

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पर द्वितीय स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा जो कि सूर्य की मित्र राशि है। ऐसा व्यक्ति दानी होता है एवं रुपया खर्च करने में आगे रहता है। ऐसा जातक अपने हुनर व परिश्रम के द्वारा धन कमाता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य यहां अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलत: जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक की परिवारिक उलझनें रहेंगी।

दशा–सूर्य की दशा जातक को धनवान बनायेगी। जातक पराक्रमी होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के समय (6 से 4 बजे) के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धन योग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनों व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–कुटुम्ब सुख में हानि।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान होगा तथा बाहुबल से खूब रुपया कमायेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–व्यक्ति का ससुराल धनाढ्य एवं पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक आध्यात्मिक, संयमी व संतोषी व्यक्ति होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकर राशि) एवं लाभ स्थान मेष राशि को देखेंगे। फलत: जातक धनी, लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा। जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
7. **सूर्य+राहु**–धन के घड़े में छेद रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

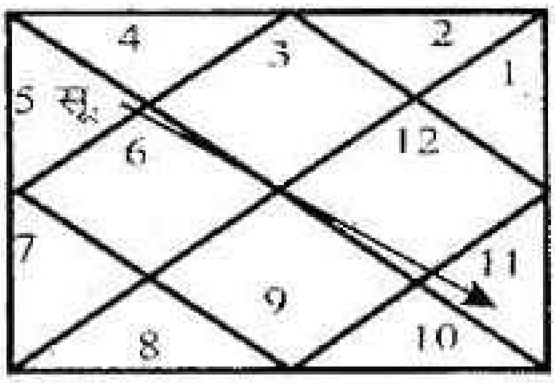

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां तृतीय स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक दौलत का राजा होता है। जातक शूरवीर एवं पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि नवम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक सौभाग्यशाली होता है व अपने भाग्य का निर्माण खुद करता है।

निशानी–मध्यम आयु के बाद जातक की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो जाती है। जातक के बड़े भाई की मृत्यु जातक के सामने होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बहुत बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि के समय दो से चार बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलत बलवान तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों, मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सहोदर सुख में हानि, बड़े भाई की मृत्यु।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां पर स्वगृही है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहे हैं। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। भाई-परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–भाई पराक्रमी होंगे। मित्रों से, राजकीय अधिकारियों से लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुंभ राशि) एवं व्यय भाव (बृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की सन्तति प्रभावशाली होगी। जातक भाग्यशूर एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–कुटुम्ब सुख में हानि होगी व कलह, विवाद रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–पराक्रम में कमी होगी, मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

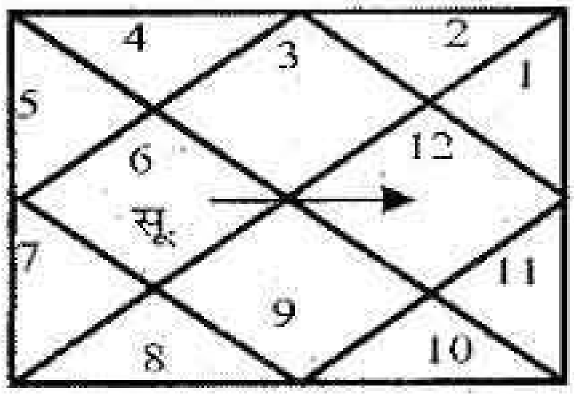

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। चतुर्थ स्थान में सूर्य कन्या राशि में होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। जातक उत्तम भू-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद का स्वामी होगा। पर अपने कमाये गये धन का उपयोग स्वयं नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति अपने परम्परागत कार्य से हटकर नये आजीविका के क्षेत्र तलाशता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ सूर्य की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। राज्य पक्ष या राजनीति से लाभ होगा।

निशानी–जातक का जन्म उच्च कुल में होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में भौतिक सुख-उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस-पास होगा। चन्द्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **सूर्य+मंगल**—भाईयों का सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि करेगा। उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रगण्य होगी।

4. **सूर्य+गुरु**—राजयोग बनेगा। नौकरी लगेगी।

5. **सूर्य+शुक्र**—सन्तति सुख, विद्या लाभ होगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहां केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृश्चिक राशि), दशम स्थान (मीन राशि) एवं लग्न स्थान, मिथुन राशि को देखेंगे। फलतः जातक के अनेक शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति में वर्चस्व होगा तथा वह महत्वकांक्षी होगा। वह जो भी योजनाएं हाथ में लेगा उसमें सफलता मिलेगी।

7. **सूर्य+राहु**—माता की मृत्यु अल्पआयु में संभव है।

8. **सूर्य+केतु**—भौतिक सुखों की प्राप्ति में संघर्ष बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

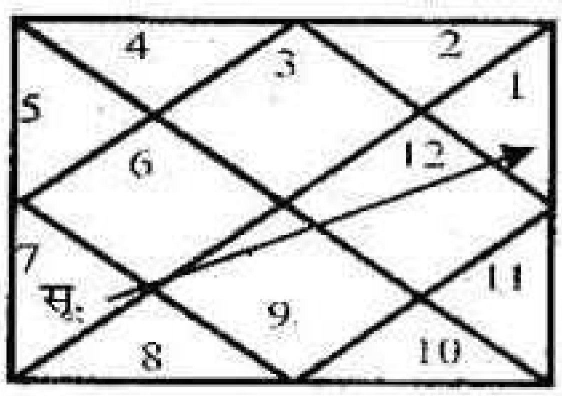

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पंचम स्थान में सूर्य तुला राशि का होगा। तुला राशि में सूर्य नीच का होता है तथा इसके 10 अंशों तक परम नीच का होता है। सूर्य की यह स्थिति जातक परिवार के लिए उन्नति कारक है। जातक

के जन्म के बाद परिवार की उन्नति होगी। जातक प्रजावान होगा। जातक के स्वयं के यहां जब पुत्र उत्पन्न होगा तब उसके स्वयं का विशेष भाग्योदय प्रारंभ होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

निशानी—दस अंशों से अधिक अंशों वाला होने पर सूर्य जातक को उत्तम विद्या, बुद्धि, नौकरी व व्यवसाय देगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम एवं विद्या बढ़ेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक की एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—प्रशासन के कार्य व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा परन्तु दोनों ग्रहों की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलतः जातक बुद्धिमान एवं प्रजावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनों सन्तति होंगी। जातक निजी व्यवसाय-व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखर पर पहुंचेगा। जातक शिक्षित होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—प्रकाशन, अध्ययन-अध्यापन के कार्य से जातक को लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—लेखन, प्रकाशन कार्य से लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुला राशि अंशों में शनि परमोच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह 'नीचभंग राजयोग' बनायेंगे। तथा सप्तम भाव (धनु राशि), एकादश भाव (मेष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः जातक स्वयं महाधनी होगा। पिता के मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमायेगा।

7. **सूर्य+राहु**–सन्तान सुख एवं कुटुम्ब सुख में बाधा होगी।
8. **सूर्य+केतु**–गर्भपात का भय होगा। विद्या रुकावट के साथ संभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

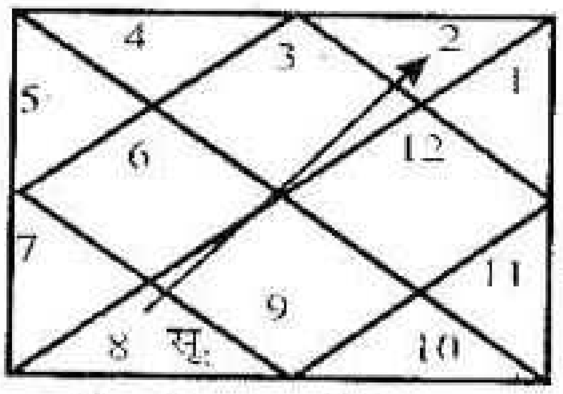

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां सूर्य वृश्चिक राशि में होगा। अपनी राशि में चौथे स्थान पर होने से ज्यादा अनिष्टकारी नहीं है। फिर भी 'पराक्रमभंग योग' तो बनाता ही है। ऐसा व्यक्ति बेफिक्र व लापरवाह होता है। जातक क्रोध में आकर कुछ भी कर सकता है। नौकरी में निरन्तर बाधा आती है। धैर्य की कमी के कारण मित्रों-परिजनों में मनमुटाव रहेगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि) होगी। फलत: नौकरी या व्यापार में बदलाव की निरन्तर स्थितियां बनती रहेंगी।

निशानी–अभावग्रस्त परिवार में जन्म होने के पश्चात् भी जातक सफलता के उच्च शिखर को स्पर्श करेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक रूखे स्वभाव का होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के छठे स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति

वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे हेने से 'पराक्रमभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की क्रमशः सृष्टि हुई है। फलतः यहां यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी इस योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–पत्नी पक्ष से वैचारिक मतभेद रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक विनम्र व कोमल स्वभाव का होगा।
6. **सूर्य+शनि**–छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टम भाव (मकर राशि), व्यय भाव (वृष राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक दीर्घ आयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। परन्तु जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक निडर किन्तु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
8. **सूर्य+केतु**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

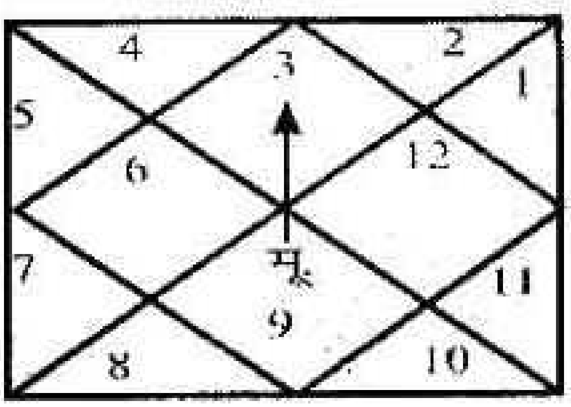

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां सप्तमस्थ सूर्य धनु राशि अपनी मित्र राशि में होगा। अपनी राशि (सिंह) से पांचवें होने के कारण सूर्य यहां शुभ फल देगा। सूर्य अग्नि राशि में होने के कारण जातक का स्वभाव कुछ भड़कीला व क्रोधी होगा। फिर भी जातक में बल, बुद्धि एवं विद्या का सम्मिश्रण प्रखर होगा। प्रथम सन्तति के जन्म के पश्चात् जातक का भाग्य चमकेगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को परिश्रम का पूरा फल मिलेगा। जातक मित्रों-परिजनों का शुभचिन्तक होगा।

निशानी–जातक को 25 वर्ष की आयु के बाद विवाह सुख मिलेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा। गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सायं छ: बजे के आस-पास होता है। धनेश व पराक्रमेश होकर दोनों ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–दाम्पत्य जीवन में कलह रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: 'कुलदीपक योग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक का गृहस्थ सुख वैभवपूर्ण रहेगा। 'हंस योग' के कारण विवाह के बाद जातक की किस्मत खुलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–गृहस्थ सुख, सन्तान सुख श्रेष्ठ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (कुंभ राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं सुख स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
7. **सूर्य+राहु**–वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोह की संभावना है।
8. **सूर्य+केतु**–गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी

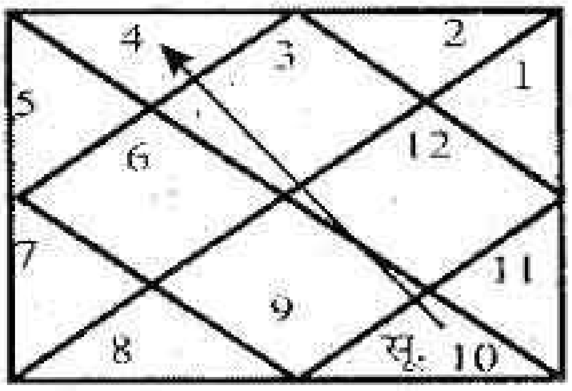

है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां अष्टम भाव गत सूर्य मकर राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। सूर्य अपनी राशि से छठे स्थान पर होने से यहां अशुभ फल ही देगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। भाईयों व मित्रों में विवाद बना रहेगा। ऐसे जातक को घर में जहरीले जानवर को नहीं पालना चाहिए। गुप्त प्रेम प्रसंग से जातक तबाह-बरबाद होगा। तेज गति के वाहन से बचना चाहिए। पाप कर्मों से बचे रहने पर ही आगे भाग्य चमकेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का धन विवाद, कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

निशानी–ऐसा जातक मरते हुए प्राणी के सामने आ जाए तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।

दशा–सूर्य की दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों के खड्डे में गिरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है। यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक का स्वभाव नकारात्मक होगा पर 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राज-ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के अष्टम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवें होने से 'पराक्रमभंग योग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना

मिलना चाहिए। यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।

4. **सूर्य+गुरु**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी व धैर्यवान् होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह राज्य भाव (मीन राशि), धनु भाव (कर्क राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। शनि यहां स्वगृही होकर मिल नामक, विपरीत राजयोग बनायेगा। फलतः जातक धनी होगा राजनीति में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को लम्बी बीमारी, दुर्घटना सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को गुप्त रोग, बीमारी संभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

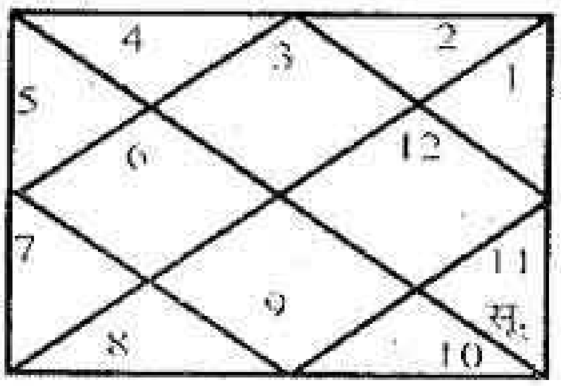

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां नवम भावगत सूर्य कुम्भ राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। यह स्थिति पिता के लिए अनिष्ट कारक है। सूर्य यहां अपनी (सिंह) राशि से सातवें (केन्द्र) में होने से शुभ फल प्रदाता है। जातक की उम्र लम्बी एवं खानदान बड़ा होगा। व्यक्ति अपने कुल-कुटम्ब की रक्षा के लिए कुर्बान होने के लिए प्रतिपल तैयार रहेगा। जातक को आध्यात्मिक, भौतिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा सहज प्राप्त होगी।

दृष्टि- नवमस्थ सूर्य की दृष्टि अपनी सिंह राशि पर एवं पराक्रम भाव पर होगी। फलतः जातक महान् पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क के सहयोग में आगे बढ़ेगा।

निशानी–इस जातक के जन्म लेते ही परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा व पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां

नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी। जो सूर्य का घर है। फलत: जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा

2. **सूर्य+मंगल**–भौतिक व सामाजिक उत्थान सम्भव है।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के नवम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। उसका पराक्रम तेज होता है। जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होंगे। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
4. **सूर्य+गुरु**–सरकार व राज्य क्षेत्र में अच्छी नौकरी की सम्भावना रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाग्य प्रबल रहेगा। सन्तति सुख उत्तम है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मेष राशि), पराक्रम स्थान (सिंह राशि) एवं छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलत: जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार में लाभ कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा, परन्तु जातक का सही भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि होगी।
8. **सूर्य+केतु**–वैराग्य की भावना बनी रहेगी। जातक का आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

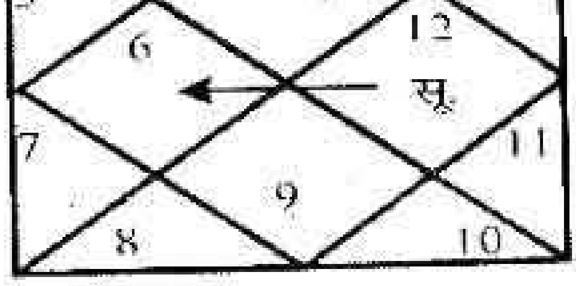

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां दशम स्थान में सूर्य मीन राशि

अपनी मित्र राशि में होगा। दशम भावगत सूर्य स्वास्थ्य, धन व प्रसिद्धि के लिए अत्यन्त शुभ माना गया है। व्यक्ति महत्वकांक्षी एवं भाग्यशाली होता है। सूर्य यहां जल राशि में है फलत: अपनी उष्णता, उग्रता व क्रूरता खो देता है। इससे जातक में नेतृत्व शक्ति ज्यादा बढ़ जाती है। अपनी सिंह राशि में अष्टम स्थान पर होने से जातक कुछ शंकालु स्वभाव का होगा पर कुटम्बी जनों से आहत होगा।

दृष्टि–दशम भावगत सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक को मकान, वाहन एवं नौकर-चाकर का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक का व्यक्तित्व राजा के समान प्रभावशाली होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति पथ की ओर लगातार आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 से 2 बजे के बीच होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी। जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक रौबीला होगा व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के दशम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। बुध यहां नीच का होगा। पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जहां बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा व्यापारी होगा। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–'जातक' राजा जैसा ही वैभवशाली होगा। 'मालव्य योग' से जातक का अचानक भाग्योदय होगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहां दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृष राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं सप्तम भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा तथा विवाह के बाद उसकी किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परन्तु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित है।
8. **सूर्य+केतु**—थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

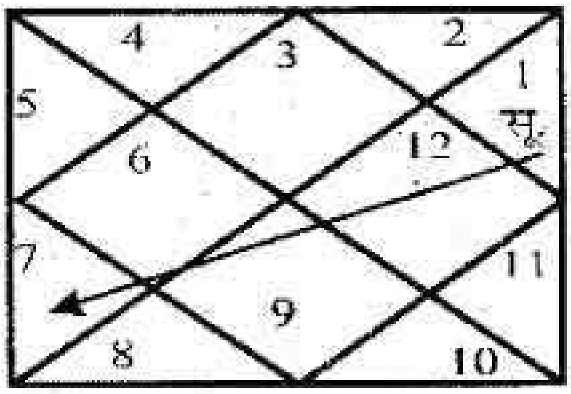

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां एकादश स्थान में सूर्य मेष राशि का होगा। जहां वह उच्च का होगा तथा 10 अंशों तक परमोच्च का होगा। अपनी (सिंह) राशि से नवम स्थान पर होने से सूर्य सवश्रेष्ठ शुभ फलों का प्रदायक है। ऐसे जातक को मित्र, समाज व ज्येष्ठ भ्राता से मनोवांछित सहयोग मिलता रहेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा। उसके एक पुत्र जरूर होगा। पुत्र भी विद्यावान होगा।

निशानी—जातक व्यक्तिगत रूप से अहंकारी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक को खूब व्यापार एवं धन लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस-ग्यारह बजे के लगभग होता है। यहां सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों में परमोच्च का हेगा। फलत: 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण

दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा। उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—बड़े भाई बहन के सुख में हानि परन्तु 'किम्बहुना योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च राशि में होगा तथा पंचम भाव को देखेगा। यह युति यहां सार्थक है। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गांव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी सन्तान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एवं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—राज्य सुख में वृद्धि होगी।

5. **सूर्य+शुक्र**—सन्तति सुख उत्तम, विद्या सुख श्रेष्ठ।

6. **सूर्य+शनि**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव (मिथुन राशि) पंचम भाव (तुला राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। फलतः ऐसा जातक विद्यावान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा।

7. **सूर्य+राहु**—बड़े भाई एवं पिता के सुख में हानि होगी। सन्तति सुख में हानि संभव है।

8. **सूर्य+केतु**—कुटुम्ब सुख में हानि महसूस करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

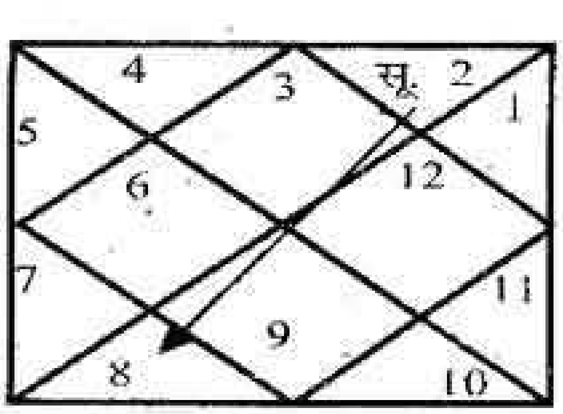

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां द्वादश स्थान में सूर्य वृष राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य

की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' बनाती है। अपनी सिंह राशि से दशम स्थान पर होने के कारण इतना अशुभ फल नहीं होगा। जातक धार्मिक यात्रा, परोपकार व सामाजिक कार्यों में पैसा खर्च करेगा। अपने मित्रों-परिजनों पर धन खर्च करेगा। जातक एय्याशी पर भी पैसा खर्च कर सकता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक रोग एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा।

निशानी–पैसे की तंगी के कारण इज्जत खतरे में पड़ेगी। जातक दूसरों की मुसीबत अपने सिर लेता है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः आठ बजे के आस-पास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों के द्वादश में जाने से 'पराक्रमभंग योग' एवं 'धनहीन योग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहुत आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा, रुपयों की बरकत नहीं होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–शैय्या सुख में हानि। पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव हैं।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेंगे। सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'विद्या बाधायोग' बना। फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–विलम्ब विवाह या शय्या सुख की हानि संभव है।
5. **सूर्य+शुक्र**–शैय्या सुख विविधता के साथ।
6. **सूर्य+शनि**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कर्क राशि), छठे स्थान (तुला राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ

राशि) को देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली तो होगा पर उसका पराक्रम भंग होगा। धन एवं इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–राजदण्ड मिल सकता है। कैद हो सकती है। शय्या सुख की हानि होगी।

8. **सूर्य+केतु**–कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय बना रहेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

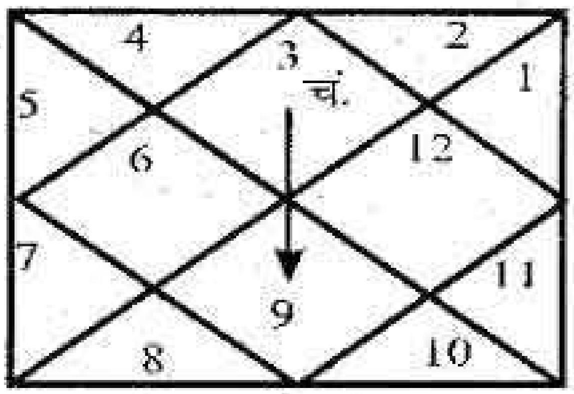

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चंद्रमा प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा एवं शत्रु क्षेत्री होगा। **'यामिनीनाथ योग'** के कारण ऐसा जातक समाज का सम्मानित व सफल व्यक्ति होगा। यद्यपि माता से वैचारिक मतभेद रहेंगे तथा माता का आशीर्वाद लेने से जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर अग्रसर होता रहेगा। जातक स्वयं के पुरुषार्थ से अच्छा धन कमायेगा। जातक संवेदनशील व शंकालु होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक की पत्नी सुन्दर, धार्मिक व पतिव्रता होगी।

निशानी–जब तक माता जीवित है जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चंद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मंगल की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। फिर भी 'लक्ष्मी योग' बनता है यहां बैठकर दोनों ग्रह, सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।
3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–'गजकेसरी योग' के कारण जातक परम भाग्यशाली होगा। मिथुनलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रु क्षेत्री होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमश: पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान की उत्पत्ति के साथ पुन: भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक विद्यवान एवं यशस्वी होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक हठी एवं अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक अपने विचारों पर स्थिर नहीं रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

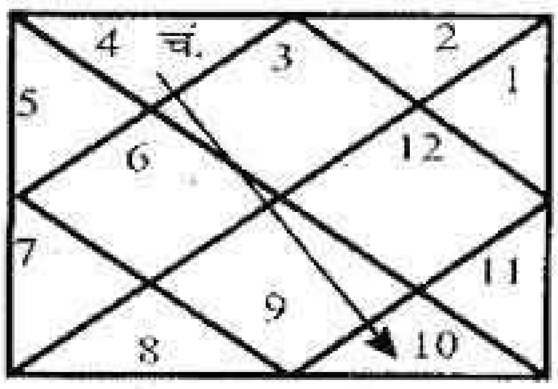

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहां द्वितीयस्थ चंद्रमा कर्क राशि में स्वगृही होगा। जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी। ऐसा व्यक्ति घर में मन्दिर बनाये व चांदी की घण्टा बजाये तो चंद्रमा का शुभ फल मिलता रहेगा। चांदी के बर्तन में भोजन करना, सोते समय दूध पीना जातक के

लिए शुभ रहेगा। जातक विद्यावान होगा। शिक्षा या संतान दोनों में से एक सुख ज्यादा अवस्था में पुष्टित होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक की आयु में वृद्धि होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

निशानी–जातक की वाणी मीठी होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक महाधनी होगा। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय 6 से 4 बजे के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धनयोग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनों व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परन्तु जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक धनी एवं परिश्रमी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होकर किम्बहुना योग बनायेगा। इनकी अमृत दृष्टि षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव पर पड़ेगी। फलतः आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक कला प्रेमी एवं रसिक मनोवृत्ति वाला होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार के द्वारा धन अर्जित करेगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक का उपार्जित धन खर्च होता रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के पास धन संग्रह कठिनता से होगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

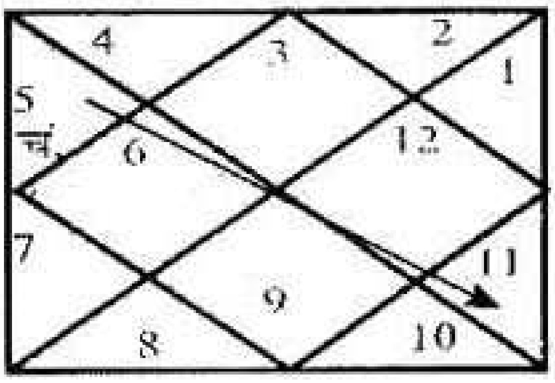

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा सिंह राशि में होगा। जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। जातक महत्वकांक्षी होगा। उसका पराक्रम तेज रहेगा। जातक भाई-बहन कुटुम्ब परिवार वाला होगा। ऐसा जातक किसी का अंकुश या दबाव सहन नहीं कर पाता।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति के घर में अकाल मृत्यु नहीं होगी। यहां चन्द्रमा मौत से रक्षा करने वाला है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। धन प्राप्ति के प्रयास सफल होंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि दो से चार बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलत बलवान् तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों, मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चंद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे फलत: ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक पराक्रमी होगा एवं उसकी बहनें अधिक होंगी।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा

की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—जातक को भाई-बहनों का सुख होगा। स्त्री मित्र भी रहेंगे।
6. **चंद्र+शनि**—जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्र भाग्यशाली व धनी होंगे।
7. **चंद्र+राहु**—भाइयों से अनबन रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**—मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

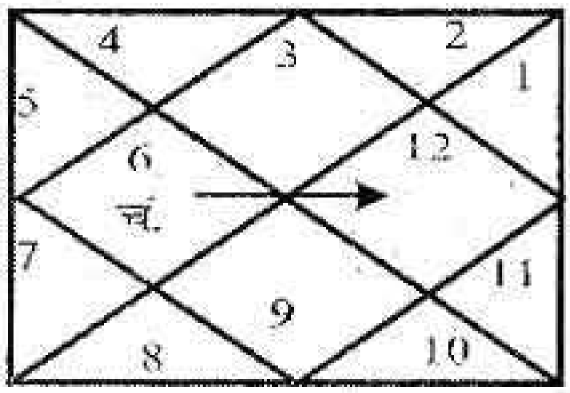

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा यहां कन्या राशि (शत्रु राशि) में होगा। फिर चंद्रमा इस भाव में बलवान होगा। यहां पर चंद्रमा को 'आमदनी का दरियाव' कहा गया है जो 'यामिनीनाथ योग' भी बनाता है। जातक के पास वाहन, स्वयं का धन एवं माता की सम्पत्ति होगी। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: राजपक्ष में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा।

निशानी—जातक भावुक, संवेदनशील, सौन्दर्य व शृंगार प्रेमी होगा। ऐसे व्यक्ति की आमदनी खर्च करने पर बढ़ती चली जाती है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक के सुख-ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म

आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस-पास होगा। चन्द्रमा यहां शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कन्या राशि में शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिग्बली होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) को देखेंगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐसा जातक धनी होगा। बड़ा व्यापारी होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः खर्च बढ़चढ़ कर रहेगा। राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा। जातक की आयु लम्बी होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक धनी होगा पर सही भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा। ठेके के कार्य में रुचि रहेगी।
7. **चंद्र+राहु**–माता को कष्ट, अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु सम्भव है।
8. **चंद्र+केतु**–वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति में विवाद सम्भव है।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

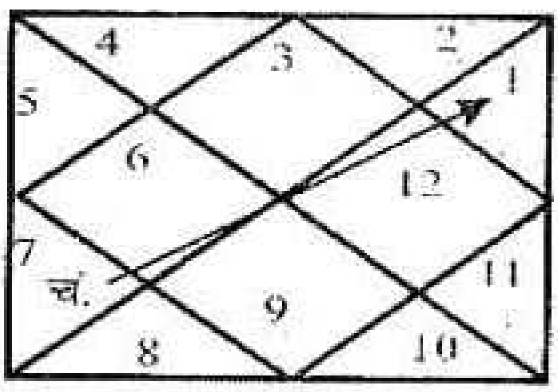

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। पंचम स्थान में चंद्रमा तुला राशि का होगा। यहां चंद्रमा को 'दूध की नहर' कहा गया है। ऐसा जातक शुभकार्य एवं बच्चों पालन-पोषण पर धन खर्च करता है। उसके घर में दौलत की बरकत रहती है। पाराशर ऋषि कहते हैं–''धनोपार्जन वृति लाश्च जायन्ते तत्सुता अपि'' जातक धनी होगा तथा उसकी सन्तति भी धनवान होगी।

दृष्टि—पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक व्यापार में धन अर्जित करेगा। विदेशी व्यापार से भी लाभ संभावित है।

निशानी—जातक के प्रथम कन्या होगी। दो कन्या की सम्भावना है।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक को नवीन उपलब्धियां मिलेंगी। धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि में 10 से 12 के मध्य होगा। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक की एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टमभाव (मकर राशि) लाभ स्थान (मेष राशि) एवं व्यय भाव (खर्च स्थान) में देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा, लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक पढ़ा-लिखा होगा। जातक की सन्तति भी पढ़ी-लिखी व सभ्य होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के पंचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान में ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा। व्यापार-व्यवसाय द्वारा जातक को अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हों तो जीवन सुखी रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी।
6. **चंद्र+शनि**—जातक करोड़पति होगा। किसी उद्योग का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**—पुत्र सन्तान प्राप्त में बाधा संभव है।
8. **चंद्र+केतु**—एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्ट्म स्थान में

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम

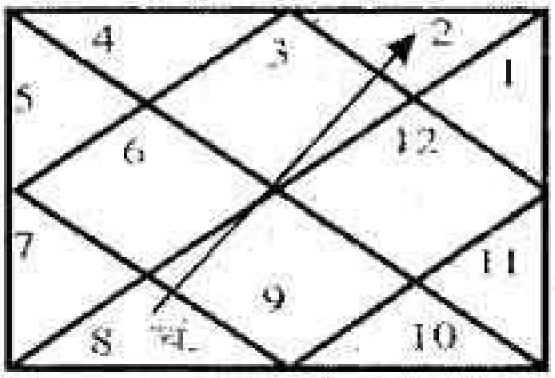

शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। छठे स्थान पर चंद्रमा अपनी नीच वृश्चिक राशि में होगा। इसमें 3 अंशों तक चन्द्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा की यह अवस्था 'धनहीन योग' बनाती है। ऐसे जातक को जीवन में निर्धनता व असफलताओं का सामना करना पड़ता है। मन अशान्त रहता है। भोजसंहिता के अनुसार जातक को विषभोजन का भय रहता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (वृषभ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–चंद्रमा के साथ पाप ग्रह तो शत्रु द्वारा धन हानि और यदि शुभ ग्रह हो तो शत्रु द्वारा धन लाभ की स्थिति बनती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा कष्टदायक होगी।

विशेष–ऐसे जातक को बासी भोजन नहीं करना चाहिए। रात्रि को सोते समय दूध नहीं पीना चाहिए।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन राशि (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा तथा भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक का परिश्रम सार्थक नहीं होगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान में चंद्रमा नीच का

होगा एवं इस कुण्डली में 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।

5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या में बाधा निश्चित है। विलम्ब सन्तति योग संभव है।
6. **चंद्र+शनि**–भाग्योदय में भारी रुकावट, संघर्ष रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**–यहां राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
8. **चंद्र+केतु**–यहां केतु लम्बी बीमारी देगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

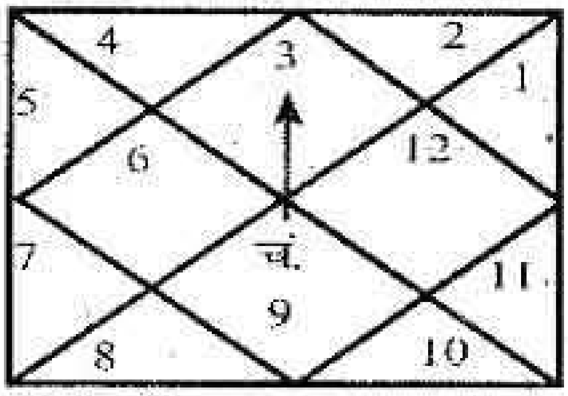

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। सप्तम स्थान में चंद्रमा यहां धनु राशि में है, जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसे चंद्रमा को 'लक्ष्मी का अवतार' कहते हैं। जातक का स्वभाव विनम्र उदार, कल्पनाशील, भावुक, संवेदनशील एवं सात्विक होता है। जातक की आर्थिक स्थिति विवाह के बाद सुदृढ़ होगी। जीवन साथी धन संग्रह में दक्ष होगा। जीवन साथी सुन्दर होगा। राजपक्ष में जातक को सम्मान मिलेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्नस्थ (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक द्वारा किये गये परिश्रम सार्थक होंगे।

निशानी–ज़ातक के जन्म के बाद घर-परिवार में धन-दौलत की बरकत होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा जातक की उन्नति होगी। वैवाहिक (गृहस्थ) सुख में वृद्धि होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म पौष

कृष्ण अमावस्या को सायं छः बजे के आस-पास होता है। धनेश व पराक्रमेश होकर दोनों ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलत: जातक राजा के सामान बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक की पत्नी सुन्दर, पतिव्रता व आज्ञाकारी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के सप्तम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृही होने से 'हंस योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न भाव एवं पराक्रम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक हैं।
5. **चंद्र+शुक्र**–पत्नी सुन्दर एवं मांसल शरीर वाली, पति वल्लभा होगी।
6. **चंद्र+शनि**–विवाह के बाद भाग्योदय होगा।
7. **चंद्र+राहु**–गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्या योग बनता है।
8. **चंद्र+केतु**–पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव परन्तु पत्नी सुन्दर होगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

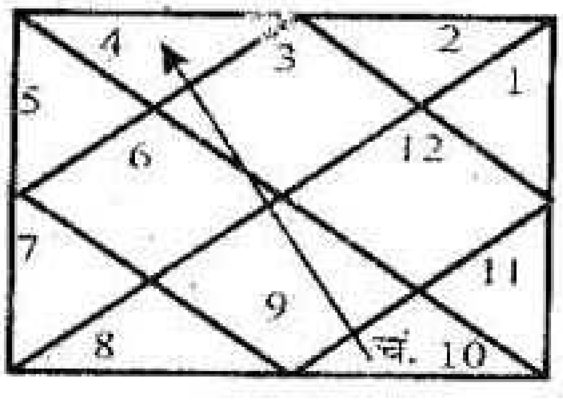

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश हैं। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मकर राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनगा। यहां चंद्रमा 'जला हुआ दूध' कहलाता है। ऐसा जातक बिना परिश्रम किये हुए धन-प्रतिष्ठा

मिलने की उम्मीद रखता है और अन्तत: निराशा हाथ लगती है। ऐसा जातक प्राय: निर्लज्ज व स्वार्थी होता तथा अनैतिक कार्यों में विश्वास रखता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि अपने ही घर (कर्क राशि) धन भाव पर होगी। जातक को अंतिम प्रयास में सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक प्राय: आलसी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विशेष संघर्ष, कष्ट एवं मानसिक वेदना की अनुभूति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों के खड्डे में गिरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है। यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार, व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पडेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। यहां बैठकर दोनो गहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: 'महालक्ष्मी योग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम जनसंपर्क तेज होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। अष्टम भाव में दोनों ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमश: 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है। फलत: यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदाई न होकर धन संग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक है। राजकाल में किसी मुकदमें में पराजय भी हो सकता है।
5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या में निश्चित रूप से बाधा आयेगी।
6. **चंद्र+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। शत्रु भय रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–शल्य चिकित्सा या दुर्घटना का योग है।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

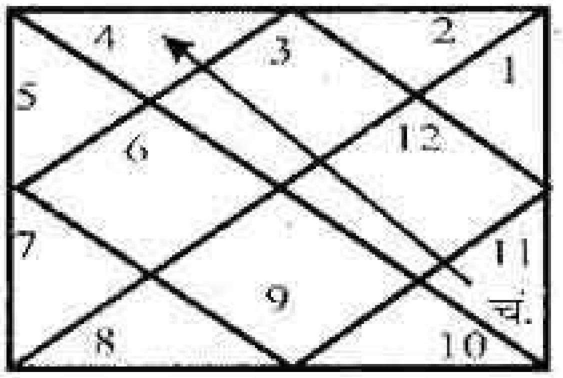

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां नवम स्थान में चंद्रमा 'कुंभ राशि' में होंगे। ऐसे चंद्रमा को 'दुखियों का रक्षक' कहा जाता है। ऐसा जातक सात्विक, धार्मिक माता-पिता, गुरुजनों का भक्त होता है। जातक प्राय: सत्यवादी एवं न्यायप्रिय होता है। उसको परोपकार एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रहती है।

दृष्टि—नवम स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक अत्यन्त पराक्रमी होगा। उसका जनसंपर्क उच्च वर्ग के अभिजात्य लोगों से होता है।

निशानी—जातक व्यापार से धनार्जन करता है। चंद्रमा का शुभ असर जातक की सन्तति पर होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक के प्रयास सार्थक होंगे एवं उसे धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी। जो सूर्य का घर है। फलत: जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा

2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। महान पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक का भाग्योदय व्यापार से होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। नवम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपके व्यक्तित्व में बढ़ोत्तरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जायेगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–विद्या, बुद्धि, हुनुर द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक राजा के समान धनी एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाग्य में रुकावट, पिता का सुख कमजोर रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

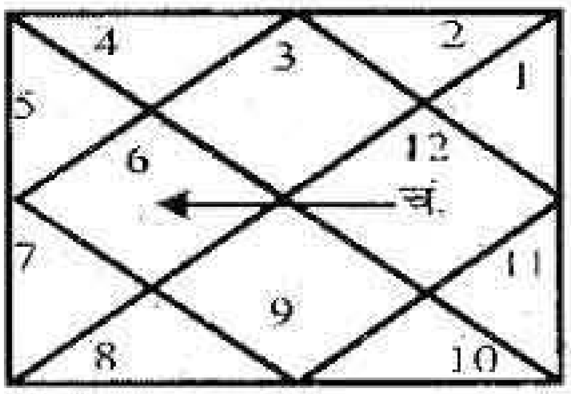

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां दशम स्थान में चंद्रमा मीन राशि में है जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। यहां चंद्रमा 'यामिन नाथ योग' बना रहा है। चंद्रमा अपनी राशि कर्क में नवम स्थान पर होने से शुभ है। ऐसा जातक सहिष्णु, धैर्यशाली, शिष्टभाषी, धर्मप्रिय एवं विनम्र होता है। जातक को राज्य पक्ष से सम्मान मिलता है।

दृष्टि–दशमस्थ चन्द्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) को देखेगा। जातक को भूमि-वाहन व माता का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक सुगंध एवं सुन्दर स्त्री व सौन्दर्य का प्रेमी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन व यश की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां